दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

jaipurtimes.org
twitter.com/JaipurTimes2
dainikjaipurtimes
youtube.com/c/JaipurTimes
instagram.com/jaipurtimesjt

वर्ष : 10 अंक : 35 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, सोमवार 24 फरवरी, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 1.5 रुपए ■ पृष्ठ : 8+2

न्यूज इनबॉक्स

कांग्रेस को मेरी जरूरत नहीं तो है मेरे पास विकल्पः थरूर

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली(एजेंसी)। केरल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पिनराई विजयन के नेतृत्व वाली एलडीएफ सरकार की तारीफ करने और कांग्रेस से नाराजगी की अटकलों के बीच सांसद

शशि थरूर ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि वह कांग्रेस पार्टी के लिए उपलब्ध हैं। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में यह भी कहा कि अगर पार्टी को उनकी सेवाओं की जरूरत नहीं है तो उनके पास विकल्प मौजूद हैं। एक पॉडकास्ट में बोलते हुए हालांकि, थरूर ने पार्टी बदलने की अफवाहों का खंडन किया। उन्होंने कहा कि भले ही विचारों में अंतर हो, लेकिन उन्हें ऐसा नहीं लगता। शशि थरूर का बयान इसलिए अहम है, क्योंकि इससे पहले उन्होंने केरल सरकार की नीतियों और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात की जमकर तारीफ की थी। यह कांग्रेस को कतई पसंद नहीं आई थी। पॉडकास्ट साक्षात्कार के दौरान कांग्रेस सांसद ने विवाद पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि मैंने कभी खुद को राजनेता नहीं माना। इसलिए मेरे संकीर्ण राजनीतिक विचार हैं।

हर मामले में प्रारंभिक जांच अनिवार्य नहीं: सुप्रीम कोर्ट

जयपुर टाइम्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने भ्रष्टाचार निवारण कानून के तहत हर मामले में प्रारंभिक जांच को अनिवार्य नहीं माना है। शीर्ष अदालत में न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और जस्टिस संदीप मेहता की खंडपीठ ने यह भी साफ किया कि प्रारंभिक जांच की मांग करना आरोपी का निहित अधिकार नहीं है। अदालत ने कहा, इस कानून के तहत दर्ज कुछ मामलों में प्रारंभिक जांच होनी चाहिए, लेकिन आपराधिक मामले दर्ज करने के लिए यह अनिवार्य शर्त नहीं। भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत कार्रवाई को लेकर कानून की व्याख्या करते हुए दो जजों की खंडपीठ ने विगत 17 फरवरी को आदेश पारित किया। शीर्ष अदालत की पीठ ने कहा कि मामले की प्रारंभिक जांच का मकसद सूचनाओं की सत्यता की पुष्टि करना नहीं है। कोर्ट ने कहा, इसका उद्देश्य केवल इतना पता लगाना है कि क्या उक्त सूचना से किसी संज्ञेय अपराध के घटित होने का पता चलता है।

प्रशासन की लापरवाही फिर पड़ी भारी

दो सौ फीट गहरे बोरबेल में गिरा मासूम, 30 फीट पर अटका

जयपुर टाइम्स

झालावाड़(एजेंसी)। झालावाड़ में 5 साल का मासूम ट्यूबवेल में गिर गया है जिससे प्रशासनिक अमले में हड़कंप मच गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने खुले बोरवैलों को ढकवाने के लिए अधिकारियों को निर्देश दिए लेकिन अधिकारियों की लापरवाही फिर उजागर हो गई है। डग थाना क्षेत्र से 12 किलोमीटर दूर स्थित पारल गांव में यह घटना हुई। सूचना मिलने पर गांव में हड़कंप मच गया।

भारत की 'विराट' जीत, पाकिस्तान को धूल चटाई

कोहली का 51वां वनडे शतक, इंटरनेशनल क्रिकेट में तीसरे टॉप स्कोरर

एजेंसी

दुबई(एजेंसी)। भारत ने चैंपियंस ट्रॉफी के दूसरे मैच में पाकिस्तान को 6 विकेट से हरा दिया है। इसी के साथ टीम ने 2017 के चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल में मिली 180 रन की हार का हिसाब बराबर कर दिया। दुबई में रविवार को पाकिस्तान ने 241 रन बनाए। भारत ने 42.3 ओवर में 4 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया।भारत से विराट कोहली ने नाबाद 100, श्रेयस अय्यर ने 56 और शुभमन गिल ने 46 रन बनाए। कुलदीप यादव को 3 और हार्दिक पंड्या को 2 विकेट मिले। पाकिस्तान से सऊद शकील ने 62 और मोहम्मद रिजवान ने 46 रन बनाए। शाहीन शाह अफरीदी को 2 विकेट मिले। अबरार अहमद और खुशदिल शाह को 1-1 विकेट मिला। विराट वनडे में सबसे ज्यादा 158 कैच पकड़ने वाले भारतीय बने। उन्होंने पारी में 15वां रन बनाते ही सबसे तेज 14 हजार वनडे रन भी पूरे कर लिए। कोहली इंटरनेशनल क्रिकेट के तीसरे टॉप स्कोरर भी बन गए। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया के रिकी पोंटिंग को पीछे छोड़ा, जिनके नाम 27,483 रन हैं।

भारत की जीत के 2 हीरो

विराट कोहली = 100 रन की पारी खेली विराट कोहली ने 111 बॉल पर

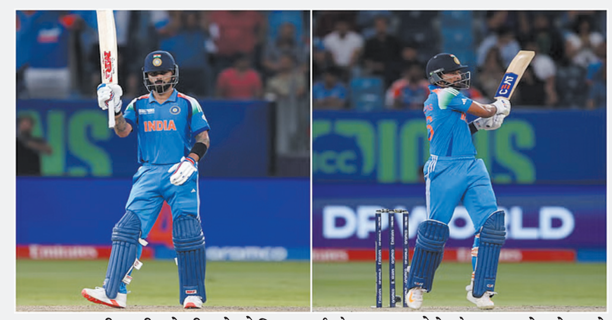

100 रन की पारी खेली। वे रोहित शर्मा के आउट होने के बाद खेलने उतरे और भारतीय पारी को बांधे रखा। विराट ने अबरार के ओवर्स को संयम से निकाला, फिर तेजी से रन बनाए।

कुलदीप यादव : 3 विकेट झटके, डेथ ओवर्स में रन बनाने से रोका कुलदीप ने 3 विकेट झटके। उन्होंने डेथ ओवर्स में सलमान आगा, शाहीन अफरीदी और नसीम शाह के विकेट लिए। इससे पाकिस्तान की टीम डेथ ओवर्स में ज्यादा रन नहीं बना सकी।

पाकिस्तान की हार के 2 कारण

धीमी बैटिंग: पावरप्ले में 2 विकेट गंवाने के बाद पाकिस्तान ने मिडिल ओवर्स में बेहद धीमे बैटिंग की। मोहम्मद रिजवान और सऊद शकील ने 144 गेंद पर 104 रन की पार्टनरशिप की। टीम 11 से 40 ओवर के बीच 180 गेंद पर 131 रन ही बना सकी।

स्पिनर्स की कमी: पाकिस्तान ने प्लेइंग-11 में एक ही फुल टाइम स्पिनर अबरार अहमद को मौका दिया। जिन्होंने 10 ओवर में 28 रन देकर 1 विकेट लिया। बाकी स्पिनर्स उनका साथ नहीं दे सके। टीम ने स्क्वॉड में लेग स्पिन ऑलराउंडर शादाब खान को भी नहीं रखा।

प्लेइंग-11

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), हार्दिक पंड्या, अक्षर पटेल, रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मोहम्मद शमी और हर्षित राणा।

पाकिस्तान: मोहम्मद रिजवान (कप्तान और विकेटकीपर), इमाम उल हक, सऊद शकील, बाबर आजम, सलमान आगा, तैय्यब ताहिर, खुशदिल शाह, नसीम शाह, शाहीन शाह अफरीदी, हारिस रऊफ और अबरार अहमद।

रफ्तार का कहर, फट गए एयरबैग

बेकाबू कार डिवाइडर से टकराई, तीन की मौत

जयपुर टाइम्स

दौसा(निस)। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर एक कार बेकाबू होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसा इतना भीषण था कि कार के परखच्चे उड़ गए। गाड़ी के एयरबैग भी खुल गए थे, लेकिन वो भी फट गए। हादसे में कार सवार माता-पिता और बेटे की मौत हो गई, जबकि बेटे की पत्नी गंभीर रूप से घायल हो गई। गंभीर घायल महिला को दौसा के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार एक ट्रक ने कट लगाते हुए ओवरटेक किया। इससे कार का आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसा दौसा जिले के कोलवा थाना क्षेत्र के धनावड़ रेस्ट एरिया के पास हुआ।

हादसे में कार के उड़ गए परखच्चेः

कोलवा थाना इंचार्ज अजय सिंह ने बताया कि महिपाल सिंह (55) निवासी नोएडा (उत्तर प्रदेश) अपनी पत्नी गीतादेवी (50), बेटे ललित सिंह (30) और पुत्रवधु पूजा देवी के साथ कार में जयपुर से दिल्ली की ओर जा रहे थे। धनावड़ रेस्ट एरिया से पहले भांडारेज के पास हादसा हो गया। हादसे में महिपाल सिंह, उनकी पत्नी और बेटे की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पूजा गंभीर घायल गई, जिसका इलाज चल रहा है। हादसे में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। प्रारंभिक तौर पर ये लग रहा है कि आगे चल रहे किसी भारी वाहन से कार की भिड़ंत हुई है। हालांकि सीसीटीवी देखने के बाद ही हादसे के कारणों का पता चल सकेगा।

अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकराई कारः

धमाके की आवाज सुनकर आस-पास के लोग मौके पर पहुंचे तो वहां कार क्षतिग्रस्त हालत में थी। कार में 4 लोग बुरी तरह फंसे हुए थे। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार एक ट्रक ने कट लगाते हुए ओवरटेक किया। इससे कार का आगे का हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और कार अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई।

बेटा चला रहा था गाड़ी, एयरबैग तक फट गएः

इस हादसे में बेटा ललित कार ड्राइव कर रहा था। उसकी पत्नी आगे की तरफ बैठी थी। जबकि पीछे वाली सीट पर मां-बाप बैठे थे। टक्कर लगते ही गाड़ी के एयरबैग भी खुल गए थे, लेकिन भिड़ंत इतनी तेज थी कि एयरबैग भी फट गए।

बजट में हर वर्ग का रखा ध्यान

बिजयनगर कांड के दोषियों पर होगी कार्रवाईः दिया कुमारी

जयपुर टाइम्स

अजमेर(निस)। उपमुख्यमंत्री व जिले की प्रभारी मंत्री दिया कुमारी रविवार को अजमेर पहुंचीं। उन्होंने कलेक्ट्रेट सभागार में बजट घोषणाओं की समीक्षा की और अफसरों से जानकारी ली। बजट को लेकर दिया कुमारी ने कहा कि यह बजट प्रदेश का चहुंमुखी विकास करेगा। इसमें हर वर्ग और क्षेत्र को ध्यान में रखा गया है। वहीं बिजयनगर कांड को लेकर भी कहा कि दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। दिया कुमारी ने कहा कि बिजयनगर कांड को लेकर सरकार व प्रशासन गंभीर है और पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है। जो भी तथ्य सामने आएंगे, कार्रवाई करेंगे और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

आईफा अवॉर्ड को लेकर कहा कि राजस्थान में यह पहली बार हो रहा है और इससे राजस्थान में टूरिज्म को बढ़ावा मिलेगा और फिल्म शूटिंग भी बढ़ेगी। इससे रोजगार भी मिलेगा।

प्रदेश बजट को लेकर दिया कुमारी ने कहा कि सर्वजन हिताय की भावना को ध्यान में रखकर काम कर रहे है। पिछली बार भी ऐतिहासिक बजट दिया और इस बार भी। इससे हर वर्ग और हर क्षेत्र को फायदा मिलेगा।

इस दौरान अजमेर को लेकर की गई बजट घोषणाओं का भी ब्यौरा दिया। उन्होंने कहा कि सरकार हर स्तर पर बजट घोषणाओं का लगातार रिव्यू कर रही है और सभी घोषणाओं को धरातल पर उतारा। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी, विधायक अनिता भदेल, विधायक रामस्वरूप लाम्बा प्रभारी सचिव गायत्री राठौड़, कलेक्टर लोकबंधु, एसपी वंदिता राणा सहित अन्य अफसर मौजूद रहे।

कांग्रेस का कृत्य शर्मनाक, अविनाश की भाषा नहीं थी असंसदीयः खर्रा

जयपुर टाइम्स

पाली(निस)। सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग मंत्री अविनाश गहलोत ने विधानसभा में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को लेकर जो कहा कि वह कायदे से न तो असंसदीय था और न ही अपमानजक। फिर भी भाजपा पार्टी का यह मानना है कि उन्हें सदन में यह बात नहीं कहनी चाहिए थी। इसको लेकर मंत्री अविनाश ने बाद में खेद भी प्रकट किया। लेकिन इस मुद्दे को लेकर विपक्ष ने आसन पर जो हमला करने का प्रयास किया और मयार्दा को तार-तार किया वह शर्मसार करने जैसा था। यह बात रविवार को पाली जिला परिषद सभागार में प्रेस को संबोधित करते हुए यूडीएच और पाली जिले के प्रभारी मंत्री झाबरसिंह खर्रा ने कही। उन्होंने कहा कि पार्टी ने इस मामले में संज्ञान लेते हुए मंत्री गेहलोत को चेतावनी दी है कि वे बोलने से पहले सजग रहे और सोचकर बोल ताकि भविष्य में इसी तरह की बातों की फिर से पुनावृत्ति न हो।

टनल का होगा निर्माण, जवाई बांध और नागौर तक पहुंचा पानीः

जवाई बांध पुनर्भरण के सवाल पर मंत्री खर्रा ने कहा कि मध्यप्रदेश से हुए समझौत के बाद जो नदियों का पानी बहकर समुंद्र में चला जाता था उसे पाली जिले के जवाई बांध और नागौर तक पहुंचाने के लिए टनल का निर्माण कार्य प्रस्तावित है। वह पूरा होने पर जल समस्या से काफी निजात मिल सकेगी।

समझाइश कर हटाएंगें अतिक्रमण

बरसात के दौरान पाली में फिर से बाढ़ जैसे हालात न हो इसको लेकर सेवा और संकल्प महासमिति के जबरसिंह राजपुरोहित ने मंत्री को ज्ञापन सौंपा। जिसमें बताया कि बरसाती पानी की निकासी के रास्ते में जगह-जगह अतिक्रमण है। उन्हें नहीं हटाया गया तो फिर से पाली में बरसात के दौरान बाढ़ जैसे हालात हो सकते है इस समस्या का समाधान आवश्यक है। इस पर मंत्री खर्रा ने कहा कि अतिक्रमण चिन्हि्त कर लिए गए है। समझाइश से पहले प्रयास में हटवाने के प्रयास करेंगे फिर भी जो नहीं मानेंगे तो सख्ती कर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की जाएगी। ताकि पाली में फिर से बरसात के दौरान जलभराव की स्थिति न हो।

पाली में बनेगा एक नया ट्रांसपोर्ट नगर

मंत्री खर्रा ने कहा कि पाली में एक और ट्रांसपोर्ट नगर की आवश्यकता है। ताकि भारी वाहन शहरी क्षेत्र में नहीं आए। इसको लेकर कार्रवाई चल रही है। इससे पहले मंत्री खर्रा ने अधिकारियों की बैठक ली। जिसमें वर्ष 2024-25 में जो बजट घोषणाएं की गई। उनमें से कौन-कौन से घोषणाएं अभी तक पूरी नहीं हुई। इसको लेकर जिलास्तर पर क्या-क्या काम होना शेष है उसे पूरा करने के निर्देश दिए। और मार्च 2025 तक वित्तीय स्वीकृति जारी कर उन कार्यो को प्रगति पथ पर ले जाने की बात कही। साथ वर्ष 2025-26 में बजट घोषणा को लेकर भी उन्होंने कहा कि पाली को लेकर जो भी घोषणाएं हुई है। जुलाई 2025 से उसको पूरा करने को लेकर खासा तैयार करना शुरू कर दिया जाएगा। पाली नगर निगम की आर्थिक खस्ताहाल को लेकर उन्होंने कहा कि निकाय को जितना खर्च करने का बजट दिया था। उससे कई गुणा ज्यादा उन्होंने खर्च किया। जिससे यह स्थिति उत्पन्न हुई है। उन्होंने कहा कि नगर निगम की सभापति रेखा-राकेश भाटी भाजपा पार्टी से थे लेकिन उन्होंने पार्टी के साथ निष्ठा नहीं रखी। जिसका नतीजा यह रहा कि उनके पांच साल के कार्यकाल में शहर विकास को लेकर कुछ विशेष कार्य नहीं हुए।

कांग्रेस आज करेगी विधानसभा का घेराव, इंदिरा गांधी पर टिप्पणी का विरोध

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा समेत 6 विधायकों के निलंबन के बाद बना गतिरोध बरकरार है। रविवार को कांग्रेस विधायक दल की बैठक हुई। बैठक में सोमवार को विधानसभा का घेराव करने की घोषणा की गई। प्रदेश कांग्रेस ने इसके लिए तैयारियां शुरू कर दी है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी में कंट्रोल रूम बनाकर सभी जिलों को कॉल किए जा रहे हैं। जयपुर के आसपास के जिलों को ज्यादा भीड़ लाने का टारगेट दिया है। विधायकों के निलंबन के खिलाफ शनिवार को प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर कांग्रेस ने विरोध-प्रदर्शन किए और पुतले जलाए थे। इधर, सदन में तीन दिन रविवार को भी विपक्षी विधायकों का धरना जारी रहा। मंत्रियों के साथ दो दौर की वार्ता विफल रही। कांग्रेस विधायक निलंबन बहाली, इंदिरा गांधी पर टिप्पणी को सदन की कार्यवाही से हटाने और सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत के माफी मांगने की मांग पर अड़े हुए हैं। वहीं संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि हमने प्रतिपक्ष के साथियों से बात की है। हम चाहते हैं सदन चले। कांग्रेस अपनी हठधर्मिता को छोड़े, अपनी गलती का एहसास करें।

यह है पूरा मामलाः

विधानसभा में 21 फरवरी को प्रश्नकाल के दौरान सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री अविनाश गहलोत की इंदिरा गांधी पर की गई टिप्पणी पर कांग्रेस ने वैल में आकर हंगामा किया था। अविनाश गहलोत ने सवाल के जवाब में कहा था कि 2023-24 में आपकी दादी इंदिरा गांधी के नाम पर योजना का नाम रखा था। मंत्री की इस टिप्पणी के विरोध में कांग्रेस विधायकों ने वैल में आकर हंगामा किया था। संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल ने कहा था कि दादी सम्मानित शब्द है। पटेल बोल रहे थे, इसी दौरान हंगामा बढ़ गया था। कांग्रेस विधायक स्पीकर की टेबल तक पहुंचने लगे थे। इसी दौरान स्पीकर ने सदन की कार्यवाही को आधे घंटे के लिए स्थगित कर दिया था। इस मुद्दे पर बने गतिरोध के कारण सदन की कार्यवाही चार बार स्थगित हुई थी। मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग ने कांग्रेस विधायकों के सस्पेंड का प्रस्ताव रखा था। स्पीकर वासुदेव देवनानी ने गोविंद सिंह डोटासरा, उप नेता प्रतिपक्ष रामकेश मीणा, अमीन कागजी, जाकिर हुसैन गैसावत, हाकम अली खान और संजय कुमार को बजट सत्र की बची हुई अवधि के लिए निलंबित कर दिया। टिप्पणी के बाद हुए हंगामे में डोटासरा और छह कांग्रेस विधायक विधानसभा स्पीकर के सामने टेबल तक पहुंच गए थे। हाथों से आक्रामक इशारे कर रहे थे। वासुदेव देवनानी ने इसे स्पीकर का अपमान और सदन के अनुशासन भंग करने से जोड़कर गलत बताया। निलंबन का आधार भी यही था।

भाजपा चाहती है डोटासरा मांगे माफी

जानकारी के अनुसार, स्पीकर चाहते हैं कि पहले गोविंद सिंह डोटासरा माफी मांगे। उसके बाद आगे की बात हो। उधर कांग्रेस पहले मंत्री से माफी मंगवाने की बात कर रही है। इसी पर गतिरोध बना हुआ है।

किसी शब्द पर आपत्ति तो कार्यवाही से हटाने को तैयार

इंदिरा गांधी पर की गई टिप्पणी को विधानसभा की कार्यवाही से हटाने पर संसदीय कार्य मंत्री ने सहमति जताई है। मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि अगर उन्हें किसी शब्द से आपत्ति है, तो वह सदन की कार्यवाही से हट जाएगा, लेकिन सदन की कार्यवाही बाधित करना गलत है। संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि हमें विश्वास है कि गतिरोध टूट जाना चाहिए। 22 फरवरी को देर रात कांग्रेस विधायकों से संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल और गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने वार्ता की। वार्ता विफल होने के बाद संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि उनका अभी उतना मन नहीं बना, लेकिन हमें विश्वास है कि हम बार-बार जाकर उनसे हकीकत को पहचानकर विकास में सहयोग करने का आग्रह करेंगे।

राजधानी जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
24 फरवरी, 2025

नरेश गोयल बने निर्विरोध अध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। एन ई बी हाऊसिंग बोर्ड स्थित शिव मंदिर में शिव मंदिर कमेटी की रविवार शाम को बैठक का आयोजन हुआ।इसमें सभी सदस्यों ने नरेश गोयल को मंदिर कमेटी का सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुना नवनियुक्त अध्यक्ष ने सभी का आभार व्यक्त किया और अपने पद के प्रति संवेदनशील रहने का प्रण लिया इस अवसर पर विशंभर दयाल, राजेश कुमार, धर्मचंद यादव, महेश चंद्र रावत, सुभाष चंद्र गोयल, राम गुप्ता, अमित सोनी, दिलीप खंडेलवाल, अनिल गोयल, नरेंद्र शर्मा, लक्ष्मीकांत गुप्ता, लक्ष्मेश सिंह आदि और भी सम्मानित कार्यकर्ता उपस्थित रहे। यह जानकारी राजेश गुप्ता ने दी।

बच्चो को बांटे उपहार ओर शिक्षण सामग्री, बच्चों से गले मिले, भर आई आंखे

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। कचरा बीनने वाले बच्चों से मंजू चौधरी अग्रवाल लिपट कर गले मिली तो लोग भाव विभोर हो गए। यह अवसर था नेक

कमाई की ओर से दाउदपुर गुरु नानक कॉलोनी में संचालित शिक्षा संस्कार वृक्ष कक्षा का यहां काफी संखया में ऐसे बच्चों को शाम को पढ़ाया जाता है जिनका स्कूल में नामांकन तो है लेकिन वे नियमित पढने नहीं जाते है।ऐसे बच्चों को शिक्षण सामग्री, खिलौने और ड्राइंग का सामान बांटा गया। यहां मानस सहित कई ब्रांड की मालकिनो ने बच्चो को संस्कार की शिक्षा दी। मंजू चौधरी ने एक मूक बधीर बच्ची को गले लगाया तो बच्ची की आंखें भर आई सभी बच्चों ने उनको चारो तरफ से घेर लिया और लिपट गए। मंजू चौधरी अग्रवाल मानस सहित कई सरसों तेल ब्रांड कंपनियों की सीईओ हैं। चौधरी नेक कमाई की संरक्षक भी हैं। नेक कमाई की ओर से चल रहे शिक्षा संस्कार वृक्ष कक्षा में संरक्षक दौलत राम हजरती ने इन कक्षाओं की जानकारी दी। मुख्य कॉर्डिनेटर अभिषेक तनेजा ने बताया कि कार्यक्रम में संस्था के शैक्षणिक प्रोग्राम अधिकारी प्रवीन तनेजा ने बताया कि यहां सोनम कौर के नेतृत्व में टीम काम कर रही है। इन बच्चो को पढ़ाई के साथ सुबह समय से उठने, पेस्ट करने ओर नहाने के बारे में बताया जाता है। यह बच्चे नियमित रूप से स्कूल नहीं जाते हैं।

सानिया हॉस्पिटल में तीन जाँच मशीनों का हुआ शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। सानिया हॉस्पिटल अलवर द्वारा रविवार को हॉस्पिटल में एमआरआई, सीआरआरटी फ़िब्रोसकैन यूएसजी की मशीनों का भव्य उद्धघाटन किया गया। इन मशीनों का भव्य शुभारंभ चारो समाजो के धर्मगुरु पंडित धर्मेंद्र शर्मा, मोलाना राशिद, मोलाना असजद, ज्ञानी रामसिंह, फादर रनेस जोसेप द्वारा किया गया।

सानिया हॉपिटल के डायरेक्टर डॉ तैयब खान ने बताया कि ये तीनो मशीने अत्याधुनिक तकनीकी की मशीने है। इन मशीनों से बीमारी को समझने में आसानी होगी जिससे उपचार करने में अधिक सफलता मिलेगी। इस अवसर पर रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह एवं पूर्व विधायक रामहेत यादव सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद रहे।

वन मंत्री ने ली बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन व विकास कार्यों के संबंध में जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक

बजट घोषणाओं को धरातल पर क्रियान्वयन के लिए अधिकारी पूर्ण मनोयोग से कार्य में जुटे - मंत्री शर्मा

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा एवं जिले के प्रभारी सचिव एवं नगरीय विकास विभाग के प्रमुख शासन सचिव वैभव गालरिया ने रविवार को मिनी सचिवालय के कलक्ट्रेट सभागार में जिले की बजट घोषणाओं के संबंध में जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर बजट घोषणाओं को त्वरित क्रियान्वयन कराने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने जिले की बजट घोषणाओं पर बिंदुवार विस्तृत जानकारी दी। मंत्री शर्मा ने कहा कि वर्ष 2025-26 का यह बजट राज्य सरकार का सर्वजन हिताय का बजट है, इसे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप बजट घोषणाओं की त्वरित क्रियान्विति सुनिश्चित करे, ताकि आमजन को समयबद्ध इनका लाभ मिल सके। इस बजट में जिले को अनेक सौगाते दी गई है, जिन्हें धरातल पर अमलीजामा पहनाने के लिए संबंधित विभागीय अधिकारी कार्य योजना तैयार कर पूर्ण मनोयोग से कार्य में जुट जाएं। उन्होंने प्रत्येक बजट घोषणा के बारे में विस्तार से चर्चा कर निर्देश दिये कि प्रत्येक विभाग बजट घोषणाओं को लागू करने हेतु कार्य के प्रत्येक चरण की समय सीमा तय कर कार्य को पूर्ण करे। उन्होंने निर्देश दिये कि जिन बजट घोषणाओं में भूमि आवंटन की आवश्यकता है उसके लिए संबंधित विभागीय अधिकारी जिला प्रशासन से समन्वय कर भूमि चिन्हित कर आवंटन की कार्यवाही करें। जिन कार्यो में प्रारम्भिक सर्वे, डीपीआर, निविदा आदि प्रक्रिया की जानी है उन्हें अविलम्ब प्रारम्भ करे।

उन्होंने कहा कि बजट घोषणाओं को पूर्ण कराने में राज्य सरकार स्तर के बिन्दुओं से अवगत कराये ताकि उनका समयबद्ध रूप में निराकरण कराया जा सके। उन्होंने बजट 2024-25 की घोषणाओं की क्रियान्विति की विस्तृत समीक्षा कर कहा कि जो कार्य पूर्ण हो गए हैं उनका लोकार्पण कराए तथा प्रगतिरत कार्यो को समय सीमा में गुणवता के साथ पूर्ण कराना सुनिश्चित करावे।

मंत्री शर्मा ने ग्रीष्म ऋतु के मद्देनजर विधायक निधि कोष से शहर के लिए स्वीकृत किए गए 36 ट्यूबवेल व अन्य मदों से स्वीकृत कराए गए 128 ट्यूबवेल्स को शुरू कराने के लिए की गई विभागीय प्रगति की समीक्षा कर उन्होंने निर्देश दिये कि यथाशीघ्र निर्धारित समय सीमा से पूर्व ही इन्हें चालू करें ताकि आमजन को पेयजल संबंधी समस्या का सामना नहीं करना पडे। उन्होंने कंटीजेन्सी प्लान, सबमर्सिबल मोटर व अन्य उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता एवं सिलीसेढ योजना से शहर को मिलने वाले पेयजल की टाइमलाइन का फीडबैक लिया। उन्होंने यूआईटी व नगर निगम के अधिकारियों को शहर में प्रवेश करने वाले प्रमुख मार्गो एवं चौराहों के सौन्दर्यकरण तथा शहर के श्मशान घाटों को हरियाली थीम पर विकसित करने की कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिये।

उन्होंने कहा कि शहर में जिन चौराहों पर वर्षा जल एकत्रित होता है वहां वाटर हार्वेस्टिंग संरचना के प्रस्ताव तैयार कराने के निर्देश दिये, ताकि शहर के भूजल स्तर में वृद्धि हो सके। उन्होंने उप वन संरक्षक को निर्देश दिये कि बजट घोषणा में स्वीकृत बायोलोजिकल पार्क को जू कम सफारी की तर्ज पर विकसित करावे। उन्होंने यूआईटी, नगर निगम एवं पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों को पूर्ण हो चुके कार्यो एवं प्रारम्भ होने वाले बडे कार्यो को चरणबद्ध रूप से लोकार्पण एवं शिलान्यास करवाने के निर्देश दिये।

प्रभारी सचिव वैभव गालरिया ने अधिकारियों से कहा कि बजट घोषणाओं के साथ अन्य विभागीय विषय जो राज्य सरकार स्तर के हैं से अवगत कराएं, ताकि उनका निराकरण समयबद्ध रूप से करवाया जा सके।

जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बजट 2025-26 की बजट घोषणाओं पर जिले में चरणबद्ध रूप से समय सीमा तय कर प्रारम्भ किए गए कार्यो के बारे में अवगत कराया तथा उन्होंने विगत बजट 2024-25 की प्रगति से अवगत कराकर पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री को विश्वास दिलाया कि जिले में बजट घोषणाओं का क्रियान्वयन बैठक दिये गये निर्देशों के अनुरूप निर्धारित समय सीमा में ही कराया जाएगा।

बैठक में रामगढ विधायक सुखवंत सिंह, पुलिस अधीक्षक संजीव नैन, एडीएम प्रथम मुकेश कायथवाल, एडीएम द्वितीय योगेश डागुर, यूआईटी सचिव धीगदे स्नेहल नाना, डीएफओ अलवर राजेन्द्र सिंह हुड्डा, डीएफओ सरिस्का अभिमन्यु सिंह सहारण, उपखण्ड अधिकारी अलवर यशार्थ शेखर, नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका, जिलाध्यक्ष अशोक गुप्ता, जलदाय विभाग के अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता भवानी सिंह शेखावत, पीडब्लूडी के अधीक्षण अभियन्ता भूरी सिंह, विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियन्ता सुधीर पाण्डे, जल संसाधन विभाग के अधिशाषी अभियन्ता संजय खत्री, सीएमएचओ डॉ. योगेन्द्र कुमार, पीएमओ सुनिल चौहान सहित संबंधित उपस्थित रहे।

क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हमारी प्राथमिकता है - प्रधान यादव

जयपुर टाइम्स

बहरोड़(निस)। पंचायत समिति बहरोड के ग्राम शिमला में पंचायत समिति प्रधान कोटे से 7 सात लाख की लागत से निर्मित सीसी सड़क का उद्घाटन सरोज बस्तीराम यादव प्रधान पंचायत समिति बहरोड के करकमलों द्वारा किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा नेता मोहित यादव अध्यक्ष क्रिकेट बोर्ड अलवर ने की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता बस्तीराम यादव एडवोकेट ने कहा

कि केंद्र एवं राजस्थान में भाजपा की सरकारो की प्राथमिकता ग्रामीण विकास है।संपूर्ण जिला अलवर एवं कोटपूतली बहरोड को ईआरसीपी में जुड़वाने के लिए केंद्रीय मंत्री एवं सांसद भूपेंद्र यादव का हार्दिक आभार सहित धन्यवाद ज्ञापित किया

तथा बजट में अलवर से भगवाड़ी हरियाणा बॉर्डर तक की सड़क को फोरलेन करवाने एवं नीमराना से घीलोठ नानकवास, गिगलाना, रायसराणा तक की सड़क का चौड़ाईकरण एवं नवीनीकरण करने पर केंद्रीय मंत्री एवं सांसद भूपेंद्र यादव एवं डॉ. जसवंत यादव विधायक बहरोड़ का धन्यवाद संहित आभार व्यक्त किया।

अंत में प्रधान कोटे से राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रांगण में इंटरलॉकिंग टाइल्स बछाने की घोषणा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष मोहित यादव ने गांव में जेजेएम के ट्यूबवेल को शीघ्र चालू करने के निर्देश दिए तथा युवाओं को रोजगार दिलाने की बात कही।

इस अवसर पर जिला पार्षद रामनरेश यादव, मंडल अध्यक्ष राधेश्याम बोहरा, अंतरराष्ट्रीय कुश्ती कोच राजकुमार पहलवान, सरपंच सोताज सिंह, सरपंच राजवीर सिंह, सरपंच, दयाराम यादव, सरपंच मुकेश यादव, सरपंच वेद कृष्णा, डॉ जयपाल सिंह, उद्योगपति भवानी सिंह, लालाराम पीटीआई, विक्रम यादव, सिकंदर यादव, अमित जागा, अभय सिंह यादव, कर्मवीर यादव, सहित दर्जनों गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन भूप सिंह यादव पूर्व अध्यापक ने किया तथा शादीराम यादव, भीम ठेकेदार, भोजराज संदीप यादव, कोमल यादव, हनुमान ठेकेदार इत्यादि सैकड़ो ग्रामीण महिलाएं व नौजवान उपस्थित थे।

शिव विवाह की झांकी एवं कथा संपन्न होगी आज

जयपुर टाइम्स

अलवर(निस)। श्री त्रिपोलेश्वर शिव शक्ति सेवा समिति के तत्वावधान में चल रही पशुपति नाथ कथा, शिव विवाह की झांकी एवं कथा आज 24 को सम्पन्न होगी। समिति के अध्यक्ष महंत जितेंद्र खेड़ापति ने बताया कि 25 फरवरी को प्रातः 10-15 अभय समाज में पार्थिव शिवलिंग की सामूहिक पूजा एवं प्रसाद वितरण किया जाएगा। इसके बाद शाम को 5-15 बजे नगर यात्रा का भव्य और आकर्षक आयोजन होगा जिसमें दक्षिण भारत की तर्ज की झाकियों के दर्शन सुंदर झाकी, बाबा त्रिपोलश्वर नाथ एवं माता पार्वती का रथ, स्कॉन हरे कृष्णा पार्टी, डीजे घोड़ी, ऊंट, घोड़ी की नृत्य कला की झांकी, शिव बारात के साथ नगर यात्रा निकाली जाएगी।इधर, श्री त्रिपोलेश्वर शिव शक्ति सेवा समिति के तत्वावधान में आयोजित पशुपतिनाथ व शिव कथा के चतुर्थ दिवस में कथा वाचक आचार्य दीपक अवस्थी ने वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग की कथा में बताया कि रावण ने अपने दस सिर काटकर भगवान शिव को समर्पित किए जिस पर प्रसन्न होकर भगवान ने उसको अपना निराकार स्वरूप लिंग के रूप में प्रदान किया रावण अपने अहंकार के कारण भगवान शिव के क्रोध का शिकार बना तथा अहंकार के कारण ही रावण अपने वंश सहित नष्ट हो गया जीवन में कभी अभिमान अहंकार को नहीं आने देना चाहिए क्योंकि अहंकार में आकर व्यक्ति अपने को और अपने द्वारा किए जाने वाले गलत कार्यो को ही उचित समझता है जिसके कारण एक ना एक दिन वह अहंकार ही उसके पतन का कारण बन जाता है और भगवान को अहमता का भाव कभी अच्छा नहीं लगता भगवान के समक्ष हमेशा अपनी अहमता और संसार के प्रति ममता के भाव को त्याग कर जाना चाहिए निर्मल मन लेकर भगवान के समक्ष जाने वाले भक्त को भगवान सहर्ष स्वीकार कर उसे अपनी निश्चल भक्ति प्रदान करते हैं आचार्य अवस्थी ने कहा कि भगवान सदा भक्त का मन देखते हैं नाकी उसके द्वारा चढ़ाई हुई वस्तु को रावण ने अपने सिर काटकर भगवान पर चढ़ाए जरूर लेकिन मनसे अहंकार को नहीं मिटा पाया नागेश्वर ज्योतिर्लिंग तथा रामेश्वर ज्योतिर्लिंग के प्रसंग में बताया भगवान शिव राम जी को और राम जी शिव जी को अपना इष्ट देव मानते राम जी व शिव जी में कोई भेद नहीं है जो भी व्यक्ति राम जी और शिव जी में भेद करता है वह चमगादड़ की योनि प्राप्त करता है घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग की कथा में बताया कि भगवान शिव शिवालय नामक स्थान पर घुश्मेश्वर के नाम से विख्यात हुए आचार्य दीपक अवस्थी ने पशुपति नाथ व्रत करने की विधि को विस्तार से बताया तथा पशुपति नाथ के व्रत की कथा को सुनाते हुए कहा कि भगवान शिव अपने भक्त की रक्षा के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं भगवान ने मार्कण्डेय ऋषि को पांच वर्ष का मिला हुआ जीवन चिरंजीवी में बदल दिया इसी के साथ भगवान की आरती कर कथा को विराम दिया जाकर प्रसाद वितरण किया गया।

प्रभारी सचिव ने किया सीएचसी टपूकड़ा का निरीक्षण

प्रबंध निदेशक रीको ने सीईटीपी का किया निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निस)। प्रबंध निदेशक एवं जिला प्रभारी सचिव शिवांगी स्वर्णकार ने सीईटीपी, औद्योगिक क्षेत्र चोपानकी एवं सलारपुर एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र टपूकड़ा का निरीक्षण किया। उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति का जायजा लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सर्वप्रथम प्रभारी सचिव शिवांगी स्वर्णकार में सीईटीपी का निरीक्षण किया। उन्होंने सीईटीपी कार्य प्रणाली की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सीईटीपी को सुचारू रूप से संचालित करने के निर्देश दिए। आरओ प्लांट की पानी सप्लाई अनियमितता को सुधारने तथा औद्योगिक इकाइयों को निरंतर आरओ पानी उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सीईटीपी इनलेट एवं आउटलेट पानी के पैरामीटर की जानकारी लेकर आवश्यक सुधारात्मक दिशा निर्देश दिए।

प्रबंध निर्देशक रिको ने अस्पताल पहुंचने के बाद लेबर वार्ड के कर्मचारियों से महीने में होने वाले प्रसव संख्या जानकारी ली। उन्होंने अस्पताल में उपलब्ध उपकरणों एवं सुविधाओं का निरीक्षण किया तथा अस्पताल कर्मियों से उनकी कार्यप्रणाली पर चर्चा की।

उन्होंने अस्पताल में उपस्थित मरीजों से वार्ता कर हॉस्पिटल की व्यवस्थाओं एवं डॉक्टर के बारे में फीडबैक लिया, इसके साथ ही भर्ती मरीजों से उनको दी जाने वाली सुविधाओं का अवलोकन किया। उन्होंने भर्ती मरीजों को प्रावधान के अनुरूप सभी सुविधा उपलब्ध करवाने को कहा। उन्होंने सरकार द्वारा प्रदत्त सभी सुविधाओं से मरीजों को लाभ पहुंचाने का निर्देश भी दिया। प्रभारी सचिव ने बजट घोषणा के तहत प्रस्तावित प्लेटेड फैक्ट्री के लिए औद्योगिक क्षेत्र सलारपुर एवं चोपानकी की भूमि का भी निरीक्षण किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि बजट घोषणाओं को निर्धारित समयसीमा में साकार करने हेतु भूमि चिन्हीकरण एवं आवंटन की प्रक्रिया शीघ्र पूरी की जाए।

निरीक्षण के दौरान मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीडा अतुल प्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक रीको यूनिट प्रथम एवं द्वितीय ज्ञानेंद्र शर्मा एवं आदित्य शर्मा, नायब तहसीलदार रामकिशन सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

जवाहर कला केन्द्र में आयोजित होगा राज्य स्तरीय आरोग्य मेला

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। राज्य स्तरीय आरोग्य मेले का आयोजन जयपुर के जवाहर कला केन्द्र में 1 मार्च से 4 मार्च 2025 तक होगा। मेले की तैयारियों को लेकर आयुर्वेद विभाग के अतिरिक्त निदेशक एवं आरोग्य मेले के नोडल डॉ. बत्ती लाल बैरवा ने विभिन्न समितियों की बैठक ली जिसमें आवश्यक दिशा निर्देश दिए। मेले के शुभारंभ समारोह के मुख्य अतिथि राज्य के उप मुख्यमंत्री एवं आयुष मंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा होंगे साथ ही अध्यक्षता जयपुर सांसद मंजू शर्मा करेंगी। विधायक कालीचरण सर्राफ, महापौर नगर निगम ग्रेटर सौम्या गुर्जर एवं प्रमुख शासन सचिव भवानी सिंह देथा विशिष्ट अतिथि होंगे। मेले के मीडिया प्रभारी डॉ. लक्ष्मण सैनी ने बताया कि मेले में विश्व स्तरीय विषय विशेषज्ञों को आमंत्रित किया गया है जिनका व्याख्यान होगा जिसमें विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की जानकारी दी जाएगी। बैठक मे सभी समितियों के प्रभारी अधिकारी व डॉ. कमल चंद, डॉ. दिनेश शर्मा परियोजना निदेशक आयुष मिशन, डॉ. सीताराम शर्मा रजिस्ट्रार इंडियन बोर्ड ऑफ मेडिसिन, डॉ. अंशुमान चतुर्वेदी, सहायक निदेशक, जयपुर ब, डॉ. समय सिंह मीणा, सहायक औषधि नियंत्रक, डॉ. शम्भू लाल शर्मा, डॉ. जगदीश बैरवा, डॉ. चेतीवाल, डॉ. राहुल पारासर, डॉ. नितिन गोयल, डॉ. कल्पना आदि ने भाग लिया।

प्रेस प्रीमियर लीग-2025 का शुभारम्भ 24 को

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। पिंकसिटी प्रेस क्लब की ओर से आयोजित पीपीएल-2025 का शुभारम्भ सोमवार 24 फरवरी 2025 से प्रातः 10 बजे से होगा। क्लब अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि क्लब महासचिव योगेन्द्र पंचौली के संयोजन में आयोजित प्रतियोगिता का ड्रा

रविवार को क्लब परिसर में निकाला गया। आठ टीमों दो पूल बनाए गए। पूल ए में फर्स्ट इण्डिया न्यूज, प्रेस क्लब रॉयल, नेशनल इलेवन, समाचार जगत पूल बी में दैनिक भास्कर, प्रेस क्लब स्टार्स, न्यूज फैक्ट राजस्थान, राजगंगा को शामिल किया गया। लीग ड्रॉ के अवसर पर उपाध्यक्ष विमल सिंह तंवर, राहुल भारद्वाज, कार्यकारिणी सदस्य डॉ. मॉनिका शर्मा पुष्पेन्द्र सिंह राजावत, अनिता शर्मा, नमोनारायण अवस्थी, संजय गौतम, शालिनी श्रीवास्तव सहित सभी टीमों के कप्तान एवं वरिष्ठ पत्रकार उपस्थित थे। सोमवार को लीग का शुभारम्भ मैच न्यूज फैक्ट राजस्थान बनाम राजगंगा के बीच प्रातः 11 बजे इंस्पायर क्रिकेट ग्राउण्ड लालकोठी स्थित पीएचक्यू के सामने खेला जाएगा।

पटेल नगर आवासीय योजना की लॉटरी 24 फरवरी को निकाली जायेगी

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा नवसृजित योजना पटेल नगर आवासीय योजना की लॉटरी 24 फरवरी, 2025 को नागरिक सेवा केंद्र में दोपहर 1ः00 बजे निकाली जायेगी।

जयपुर विकास आयुक्त आनन्दी ने बताया कि जेडीए द्वारा जोन-10 में खोरी रोपाडा में पटेल नगर आवासीय योजना विकसित की गई है।

योजना में ऑनलाईन आवेदन दिनांक 14.01.2025 से 13.02.2025 तक आमंत्रित किए गए थे। योजना में कुल 270 भूखण्ड है। पटेल नगर आवासीय योजना में प्राप्त 52305 आवेदन पत्रों में से विभिन्न कारणों - स्वंय के प्रार्थना पत्र, तकनीकी कारणों आदि के कारण 189 आवेदन पत्र निरस्त किए जाने के उपरान्त 52116 आवेदन पत्र लॉटरी में सम्मिलित किए गए है।उक्त योजना में 76-120 व.मी. तक के भूखण्डों की संख्या 138 के विरूद्ध 34061 आवेदन पत्र, 121-220 वर्ग मीटर तक के भूखण्डों की संख्या 132 के विरूद्ध 18055 आवेदन पत्र कुल-52116 आवेदन पत्र लॉटरी में सम्मिलित किए गए है। योजना की आरक्षित दर रूपये 18,000 प्रति व.मी. निर्धारित है एवं रेरा पंजीयन क्रमांक RAJ/P/2023/2588 है।

जिला प्रभारी मंत्री ने बैठक लेकर बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन के दिए निर्देश

बजट घोषणाओं को धरातल पर उतारने को लेकर अधिकारी पूरी तरह गंभीर रहें और तत्परता दिखाएं - जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं जिला प्रभारी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने रविवार को बजट 2025-26 को लेकर जिला परिषद सभागार में बैठक लेकर अधिकारियों के साथ बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की। बैठक में खींवसर विधायक रेवंतराम डांगा,विधायक डेगाना अजय सिंह किलक जिला प्रमुख भागीरथ चौधरी, जिला प्रभारी सचिव कुलदीप रांका, जिला कलक्टर अरुण कुमार पुरोहित ,पुलिस अधीक्षक नारायण टोगस जिलाध्यक्ष भाजपा रामधन पोटलिया, मेड़ता प्रधान संदीप चौधरी सहित जनप्रतिनिधिगण व जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में जिला प्रभारी मंत्री चौधरी ने विभिन्न विभागों से बजट घोषणाओं को लेकर चर्चा की और सुनिश्चित किया कि सभी योजनाओं और परियोजनाओं का समय पर और प्रभावी क्रियान्वयन हो। उन्होंने बैठक में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि बजट में घोषित सभी योजनाओं और परियोजनाओं को निर्धारित समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा किया जाए। उन्होंने कहा कि जनता के हित में कार्य करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए और इसके लिए सभी विभागों को एकजुट होकर काम करना होगा।

सरकार घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन को लेकर गंभीर - जिला प्रभारी मंत्री

जिला प्रभारी मंत्री चौधरी ने अधिकारियों से कहा कि वे अपने-अपने विभागों में बजट घोषणाओं के अनुसार काम में तेजी लाएं और किसी भी प्रकार की देरी या अड़चनों को तुरंत सुलझाने का प्रयास करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए की बजट घोषणाओं की क्रियान्विति व सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र तक पहुंचाने को प्राथमिकता दे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार आमजन के कल्याण के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री का यही विजन है कि सभी बजट घोषणाओं को धरातल पर जल्द से जल्द उतारा जाए। जिला प्रभारी मंत्री ने पूर्व बजट की क्रियान्विति की समीक्षा करते हुए पीएचईडी के अधिकारियों को आगामी गर्मी के मौसम को देखते हुए पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए आवश्यक कार्रवाई एवं सुधार समय से पहले ही करने के निर्देश दिए जिससे कि आमजन को गर्मी में पेयजल को लेकर किसी भी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े।

अधिकारी गंभीरता से करें कार्य - प्रभारी सचिव रांका

जिला प्रभारी सचिव रांका ने कहा कि बजट घोषणाओं को लेकर सभी विभागाधिकारी पूर्ण गंभीरता से कार्य करें ताकि आमजन को समय पर लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि सभी अधिकारी अपने राजकीय दायित्वों का निर्वहन संवेदनशीलता और सजगता से करें और कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि बजट घोषणा अनुसार आवश्यक भूमि का चिन्हीकरण समय पर कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें और भूमि चयन करते हुए आमजन कि सुविधाओं और पहुंच का ध्यान रखें. उन्होंने कहा कि कार्यों में किसी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी.

अधिकारियों ने बताई विभागवार विभिन्न कार्यों की प्रगति

जिला कलक्टर पुरोहित ने विभागवार विभिन्न कार्यों की प्रगति के बारे में पीपीटी के माध्यम से विस्तार से बताया। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे, जिन्होंने अपने-अपने विभागों की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

राठौड़ के प्रदेशाध्यक्ष बनने से भाजपा कार्यकर्ताओं में अपार ऊर्जा, शक्ति, उत्साह व जोश का संचार : शर्मा

कोटपूतली(निस)। संगठन पर्व 2024 के अन्तर्गत भाजपा प्रदेशाध्यक्ष पद पर वरिष्ठ नेता मदन राठौड़ के निर्वाचित होने पर कोटपूतली-बहरोड़ जिले के वरिष्ठ भाजपा नेता एवं राजस्थान सेवानिवृत कर्मचारी महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष पं. बृजमोहन शर्मा ने हर्ष व्यक्त करते हुये राठौड़ समेत प्रदेश भर के कार्यकर्ताओं को बधाई दी है।

इस पर प्रतिक्रिया देते हुये पं. शर्मा ने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा समेत केन्द्रिय पर्यवेक्षयक व गुजरात के पूर्व सीएम विजय रूपाणी, प्रदेश प्रभारी राधा मोहन दास अग्रवाल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे एवं वरिष्ठ नेताओं व पार्टी पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि राठौड़ के इस पद पर पुन निर्वाचित होने से आम कार्यकर्ताओं की भावना की जीत हुई है। साथ ही कार्यकर्ताओं में अपार ऊर्जा, शक्ति, उत्साह व जोश का संचार हुआ है। उन्होंने कहा कि राठौड़ को जब प्रदेशाध्यक्ष मनोनीत किया गया था, तभी से वे निरन्तर भाजपा कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आमजन की समस्याओं को त्वरित रूप से हल कराने के चलते सबकी पसंद बन गये थे। जिससे आमजन निरन्तर अपनी समस्याओं को लेकर उनके पास जाते रहे है एवं राठौड़ के द्वारा जन भावनाओं के अनुरूप इन समस्याओं को हल करने का कार्य किया जा रहा है। जिससे सभी वर्ग राठौड़ की कार्यशैली से प्रभावित है। उनके निर्विरोध प्रदेशाध्यक्ष निर्वाचन से पार्टी कार्यकर्ता ही नहीं बल्कि प्रदेशवासियों में भी हर्ष की लहर दौड़ गई है। शर्मा ने कहा कि राठौड़ के नेतृत्व व कुशल मार्गदर्शन में पार्टी संगठन मजबुती के साथ नई ऊंचाईयों को प्राप्त करेगा एवं प्रदेश में पार्टी की स्थिति और भी सुदृढ़ होगी।

भाजपा की विचारधारा पंक्ति में खड़े व्यक्ति एवं जन-जन तक पहुँचाने में राठौड़ सकारात्मक भूमिका निभायेगें। उन्हें संगठन का व्यापक अनुभव है, वे एक कुशल कार्यकर्ता से लेकर एक जनप्रतिनिधि, एक नेता, दो बार विधायक, पांच बार जिलाध्यक्ष के साथ-साथ विभिन्न पदों व भूमिकाओं में अपनी कार्यकुशलता का सार्थक परिचय दे चुके है। जिसका लाभ भाजपा के संगठन को मिलेगा। उल्लेखनीय है कि राठौड़ को सात माह में ही दूसरी बार राजस्थान भाजपा की कमान सौंपी गई है। सीएम भजनलाल शर्मा, पूर्व सीएम वसुंधरा राजे समेत तमाम नेताओं की मौजूदगी में उनके नाम की घोषणा हुई। इस दौरान पूर्व सीएम वसुंधरा राजे ने भाषण में संगठन एकजुट, नो गुट, एक मुख का नारा दिया।

राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट-2024) की तैयारियों में जिला प्रशासन एवं पुलिस का कड़ा रुख

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कास)। आगामी 27 एवं 28 फरवरी को आयोजित होने वाली राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट-2024) के सफल आयोजन हेतु जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन ने जोरदार तैयारियाँ शुरू कर दी हैं। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी एवं पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसेफ ने जयपुर के एक निजी विद्यालय के सभागार में आयोजित बैठक में परीक्षा की सुचिता एवं पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को दिशा निर्देश प्रदान किये।बैठक में समस्त केंद्र अधीक्षकों, अतिरिक्त केंद्र अधीक्षकों, प्रश्न पत्र समन्वयकों एवं ओएमआर समन्वयकों को परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही न बरतने का स्पष्ट संदेश दिया गया। अधिकारियों से आग्रह किया गया कि परीक्षा के आयोजन में किसी भी तरह की असावधानी बरतने से न केवल परीक्षा की निष्पक्षता पर प्रश्नचिन्ह लगेगा बल्कि भविष्य में होने वाले विधि विरुद्ध कार्यों पर सख्त कार्रवाई भी की जाएगी।

बैठक के उपरांत जिला कलक्टर एवं पुलिस आयुक्त ने निजी विद्यालय परिसर के स्ट्रांग रूम का दौरा किया, जहाँ सुरक्षा व्यवस्थाओं, दस्तावेजों एवं अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं की जाँच-पड़ताल की गई। इस दौरान अधिकारियों को यह भी निर्देश दिया गया कि स्ट्रांग रूम एवं अन्य संबंधित स्थानों की सुरक्षा को

सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए ताकि किसी भी प्रकार की चूक या लापरवाही न हो।

जिला परीक्षा संचालन समिति के नोडल अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर (पूर्व) गोपाल सिंह शेखावत ने यह जानकारी दी कि परीक्षा के दौरान पेपर लीक, नकल या अन्य अनुचित साधनों का उपयोग करने वाले आरोपियों के खिलाफ राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (अनुचित साधनों के उपयोग की रोकथाम) अधिनियम के प्रावधानों के तहत कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा अधिनियम-2022 एवं 2023 के संशोधन के तहत, धारा 10 (1) में 3 वर्ष का कारावास और एक लाख रुपये का जुर्माना तय किया गया है। यदि जुर्माना नहीं दिया जाता है तो 9 माह के कारावास का प्रावधान रहेगा। वहीं, धारा 10 (2) के अंतर्गत 10 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक का दंड और जुर्माना 10 लाख रुपये से 10 करोड़ रुपये तक लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, ऐसे गंभीर अपराधों में दोषी व्यक्तियों की संपत्ति की कुर्की और अधिग्रहण भी किया जा सकता है।

इस कड़ी कार्रवाई का उद्देश्य परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार के अनियमित या विधि विरुद्ध गतिविधि को जड़ से खत्म करना है ताकि परीक्षा की विश्वसनीयता एवं निष्पक्षता बनी रहे। अधिकारियों ने पूर्ण तैयारी के साथ परीक्षा संचालन समिति के हर सदस्य को यह चेतावनी दी है कि किसी भी प्रकार की चूक या लापरवाही न केवल परीक्षा की गरिमा को नुकसान पहुंचाएगी बल्कि कानून की कठोर धारा का भी सामना करना पड़ेगा।इस प्रकार जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन ने राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा (रीट-2024) के सफल आयोजन हेतु हर संभव प्रयास करते हुए, परीक्षा की निष्पक्षता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सख्त कदम उठाए हैं।

ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन, विभिन्न प्रतियोगिताओं में युवाओं व विधार्थियों ने लिया भाग

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। निकटवर्ती ग्राम खड़ब स्थित खेल मैदान पर रविवार को ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ब्लॉक कोटपूतली के नेशनल यूथ वॉलिंटियर मोनू स्वामी ने बताया कि युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के नेहरू युवा केंद्र जयपुर जिला युवा अधिकारी कुमार मधुकर व अकाउंटेंट प्रहलाद सैनी के निर्देशानुसार ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। जिनमें कबड्डी व रस्साकशी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रही टीम को वॉलीबॉल व बैडमिंटन व प्रमाण पत्र प्रदान किया गया तथा दौड़ प्रतियोगिता में मैडल व प्रमाण पत्र वितरित किये गये। जो खिलाड़ी ब्लॉक स्तर पर जीत कर आये हैं वह जिला स्तर पर प्रतियोगिता में भाग लेंगे। प्रतियोगिता में रस्साकशी, कबड्डी, 100 मीटर, 200

मीटर दौड़ का आयोजन किया गया। 100 मीटर दौड़ में कविता गुर्जर, जिया धानका, अन्नु सैनी व 200 मीटर दौड़ में कमल कुमावत, पलक गुर्जर व मुस्कान क्रमश प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रही। इसी तरह पुरुष 100 मीटर दौड़ में रामशरण कुमावत, विकास कुमार, पीयूष मीणा व 200 मीटर दौड़ में देवेंद्र आर्य, युवराज सिंह व निकेश गुवारिया ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान हांसिल किया। रस्साकशी में प्रथम स्थान रानी अहिल्याबाई टीम ने प्राप्त किया तथा कबड्डी में स्वामी विवेकानंद युवा मंडल खड़ब टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि अशोका कोचिंग संस्थान के निदेशक इंजी. राजेश चौधरी ने युवाओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि खेल को खेल की भावना से खेलना चाहिये। खेल में कोई भी छोटा बड़ा नहीं होता है। उन्होंने सभी खिलाडियों को बधाई देते हुये कहा कि खेल के माध्यम से राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर जाकर अपने माता-पिता, गांव व विधालय का नाम रोशन करना है। विशिष्ट अतिथि मालाराम गुर्जर रहे।

महाकुंभ एवं अयोध्या तीर्थयात्रा के उपरांत केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने पुष्कर पहुंच ब्रह्मा मंदिर में किए दर्शन

जयपुर टाइम्स

पुष्कर (निस)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री तथा अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी ने संसदीय क्षेत्र की आठों विधानसभाओं के 1300 कार्यकर्ताओं के साथ प्रयागराज महाकुंभ संगम स्नान एवं अयोध्या धाम में प्रभु श्रीरामलला के दर्शन की दो दिवसीय पवित्र तीर्थ यात्रा सम्पन्न करने के पश्चात रविवार को पवित्र तीर्थराज पुष्कर पहुंचकर ब्रह्म सरोवर की पूजा-अर्चना की और ब्रह्मा मंदिर में दर्शन किए।

भगवान ब्रह्मा जी से सुख-समृद्धि की कामना : प्रयागराज महाकुंभ में स्नान और अयोध्या धाम में भगवान श्रीरामलला के दर्शन के बाद तीर्थराज पुष्कर में ब्रह्म सरोवर की पूजा-अर्चना करते हुए केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने भगवान ब्रह्मा जी का वंदन किया। उन्होंने देश, प्रदेश और संपूर्ण सृष्टि के कल्याण, सुख-समृद्धि और खुशहाली के लिए प्रार्थना की। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारी, स्थानीय कार्यकर्ता और श्रद्धालु भी उपस्थित रहे, जिन्होंने संसदीय क्षेत्र के ऐतिहासिक तीर्थ यात्रा अभियान को सफलतापूर्वक पूर्ण करने पर हर्ष व्यक्त किया।

तीर्थयात्रा की सफलता पर ब्रह्माजी की आराधना : केंद्रीय मंत्री

भागीरथ चौधरी ने कहा कि महाकुंभ संगम स्नान और अयोध्या में प्रभु श्रीराम के दर्शन के बाद पुष्कर तीर्थ में भगवान ब्रह्मा जी की आराधना करने का अवसर प्राप्त होना सौभाग्य की बात है। यह यात्रा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सनातन संस्कृति और आस्था के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा का प्रतीक है। भगवान ब्रह्मा जी से प्रार्थना है कि वे सृष्टि पर कृपा बनाए रखें और सभी देशवासियों को सुख-शांति प्रदान करें।

सनातन परंपराओं की पुनर्स्थापना का संकल्प : केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि यह धार्मिक यात्रा भारत की प्राचीन तीर्थ परंपरा, भक्ति और सांस्कृतिक गौरव को पुनः जागृत करने का माध्यम बनी। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सनातन संस्कृति की यह तीर्थ यात्राएँ आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक समरसता का संदेश देती हैं।

तीर्थयात्रा के सफल संचालन के लिए आभार : केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने इस यात्रा को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी कार्यकर्ताओं, श्रद्धालुओं और व्यवस्थापकों का आभार व्यक्त किया और कहा कि भविष्य में भी इस तरह के धार्मिक और सांस्कृतिक यात्राओं का आयोजन किया जाएगा, जिससे समाज में धार्मिक चेतना और एकता को बल मिले।

कबीर उत्थान समिति के दस्तावेज चोरी कर धोखाधड़ी से नवीनीकरण करवाने का मामला

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निस)। कस्बे की एक सामाजिक संस्था कबीर उत्थान समिति के दस्तावेज चोरी कर फर्जी दस्तावेज तैयार करते हुये धोखाधड़ी से कॉपरेटीव एक्ट के तहत समिति का नवीनीकरण कराये जाने का मामला सामने आया है। इस सम्बंध में न्यायालय के आदेश पर स्थानीय थाने में मामला दर्ज करवाया गया है। दर्ज रिपोर्ट के अनुसार कस्बे के मौहल्ला बड़ाबास निवासी समिति सचिव भगवान सहाय धानका ने दर्ज करवाया कि उनकी समिति राजस्थान सहकारी अधिनियम के तहत पंजीकृत है। कुछ लोगों ने समिति को क्षति व स्वयं को लाभ पहुँचाने के उद्धेश्य से समिति का रिकॉर्ड चोरी करते हुये षड्यंत्र रचकर फर्जी दस्तावेज तैयार कर लिये। जिसके आधार पर समिति के सरकारी रिकॉर्ड में अपना नाम संधारित कराते हुये सहकारिता विभाग से समिति का नवीनीकरण भी करवा लिया। मामले में दर्ज रिपोर्ट के अनुसार कोटपूतली निवासी बाबूलाल खर्रा पुत्र मातादीन धानका, ग्राम शुक्लावास निवासी सुरेश पुत्र मामराज, ललित कटारिया पुत्र जगराम मास्टर, अजीतपुरा निवासी हजारी लाल कटारिया पुत्र रामस्वरूप, बानसूर के बालावास, रतनपुरा निवासी अनीश पुत्र सुदेश मास्टर, ग्राम खरकड़ी निवासी संतलाल पुत्र रामकुंवार आदि के विरूद्ध चोरी, धोखाधड़ी, षड्यंत्र रचकर कुटरचित दस्तावेज तैयार करने के आरोप है।

सुविचार

बस इतनी सी बात समुंदर को खल गई, एक कागज़ की नाव मुझपे कैसे चल गई।

संपादकीय .....

लीपापोती की नाकाम कोशिश

बांग्लादेशी सीमा सुरक्षा बल 'बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश' (बीजीबी) के महानिदेशक मेजर जनरल मोहम्मद अशरफुज़्ज़मां सिद्दीकी द्वारा दिया गया यह बयान कि उनके देश में 'अल्पसंख्यकों पर हमले नहीं हुए और खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर' पेश किया गया', अत्याचार पर लीपापोती की नाकाम कोशिश है। सिद्दीकी के इस दावे पर कैसे यकीन किया जा सकता है, जब इतनी जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध है? यह तीस-चालीस साल पुराना दौर नहीं है, जब ऐसी घटनाओं को दबा देने की काफी गुंजाइश रहती थी। शेख हसीना के जान बचाकर भारत आने के बाद बांग्लादेश में जिस तरह अराजकता फैली और अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया गया, उसे सोशल मीडिया पर पूरी दुनिया ने देखा था। उसके वीडियो आज भी ऑनलाइन उपलब्ध हैं। सिद्दीकी कितने वीडियो को झुठलाएंगे? जब बांग्लादेश में उथल-पुथल जारी थी, तब भारत में कई यूट्यूब चैनल इस पड़ोसी देश में अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का मुद्दा उठा रहे थे। उन वीडियो के नीचे कई बांग्लादेशी हिंदुओं और ईसाइयों ने टिप्पणियां की थीं कि 'हम असुरक्षित महसूस कर रहे हैं, हम भयभीत हैं, हमारी सहायता करने के लिए कोई नहीं है और हम अपने भारतीय भाइयों-बहनों से उम्मीद करते हैं कि वे हमारी आवाज उठाएंगे।' कई टिप्पणियां बांग्ला भाषा में की गई थीं, जिनके स्वत: अनुवाद की सुविधा के कारण बहुत आसानी से समझा जा सकता है कि सिद्दीकी के दावे में दम नहीं है। सिद्दीकी उन बांग्लादेशी अखबारों की रिपोर्टों के आधार पर दुनिया के सामने यह झूठ पेश कर सकते हैं, जो शेख मुजीबुर्रहमान की प्रतिमा पर हथौड़े चलाए जाने की खबरें प्रकाशित करने से हिचकते रहे। जहां राष्ट्रपिता के सम्मान की यूं सरेआम धज्जियां उड़ाई गईं, महिला प्रधानमंत्री के वस्त्रों को सड़कों पर अश्लीलतापूर्वक लहराया गया, अवामी लीग के कार्यालयों और नेताओं-कार्यकर्ताओं के घरों पर धावा बोला गया, वहां अल्पसंख्यकों पर हमले नहीं हुए? सिद्दीकी किसके द्वारा लिखी गईं पंक्तियां बांच रहे हैं?

ये बांग्लादेशी अधिकारी कहते हैं कि उनके देश के 'प्राधिकारियों ने अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए कदम उठाए', जिसके समर्थन में यह उदाहरण दे रहे हैं कि उनकी 'सेना ने अंतरराष्ट्रीय सीमा पर अपने अधिकार क्षेत्र के आठ किलोमीटर के भीतर दुर्गापूजा पंडालों को 'व्यक्तिगत रूप से' सुरक्षा प्रदान की!' अगर दुर्गापूजा पंडालों की सुरक्षा के लिए सेना को तैनात करना पड़ जाए तो यह अपनेआप में इस बात की पुष्टि है कि वहां अल्पसंख्यकों पर खतरा था, उन पर हमले हुए थे। कोई भी देश सेना को कब तैनात करता है? अगर खतरे की कोई बात ही नहीं होती तो स्थानीय पुलिसकर्मियों को तैनात किया जा सकता था। यकायक कोई सेना को नहीं बुलाता। जब मामला पुलिस के हाथ से निकल जाए, कानून व्यवस्था बेपटरी हो जाए और खतरा टलने का नाम न ले तो सेना का ही सहारा लेना बाकी रह जाता है। बीजीबी के महानिदेशक यह कहकर अपनी पीठ थपथपा रहे हैं कि 'इसका प्रमाण हाल में आयोजित दुर्गापूजा है, जो सबसे शांतिपूर्ण ढंग से आयोजित और व्यवस्थित हिंदू त्योहारों में से एक था। बांग्लादेश की कानून प्रवर्तन एजेंसियों को सरकार से बहुत सख्त हिदायत मिली थी, ताकि हिंदू समुदाय इसे कर सके।' वास्तव में सरकार की ओर से बहुत सख्त हिदायत मिलना सिद्ध करता है कि बांग्लादेश में बड़े स्तर पर हिंसा हुई थी, जिसकी चपेट में अल्पसंख्यक भी आए थे। सरकार के मुखिया के तौर पर मोहम्मद यूनुस कोरी बयानबाजी करते रहे। उधर, कट्टरपंथियों ने भारी उपद्रव मचा रखा था। इससे यूनुस की खूब किरकिरी हुई थी। बांग्लादेशी अल्पसंख्यकों की रक्षा के लिए भारत से लेकर अमेरिका तक प्रदर्शन हुए थे। यूनुस को निश्चित रूप से इस बात को लेकर आशंका थी कि अगर अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के लिए अब कोई उपाय नहीं करेंगे तो 'कार्रवाई' हो सकती है। अगर उन्होंने 'बहुत सख्त हिदायत' दी होगी, तो इसी के मद्देनजर दी होगी। सिद्दीकी ने लीपापोती की बहुत कोशिश की, लेकिन वे अपने शब्दों से बांग्लादेशी सरकार की पोल खोलते गए। बेहतर होता कि वे इतनी ऊर्जा उन उपद्रवियों के खिलाफ कार्रवाई करने में लगाते, जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बांग्लादेश की प्रतिष्ठा को पलीता लगा दिया है।

ट्वीटर टॉक

लोकतंत्र में विपक्ष को कुछ भी कहने की आज़ादी है, लेकिन क्या कांग्रेस ने कभी किसान सम्मान निधि देने के बारे में सोचा? क्या 150 यूनिट बिजली मुफ्त देने या घर-घर सोलर पैनल लगाने पर विचार किया? हम बिजली के मामले में आत्मनिर्भर बनने की ओर बढ़ रहे हैं।

-मदन राठौड़

छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई। आपका जनसेवा व विकास के प्रति समर्पण प्रदेश को नई ऊंचाइयों तक ले जाए, यही मेरी मंगलकामना है। प्रभु श्री राम से आपके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की प्रार्थना करती हूँ।

-दीया कुमारी

दिल्ली के मेजर ध्यानचंद स्टेडियम से 21 गन सैल्यूट कॉन्कोर्स डी'एलिगेंस का 11वें संस्करण की शुरुआत कर खुशी मिली। दिल्ली से गुरुग्राम तक विंटेज कारों की रैली को हरी झंडी दिखाना रोमांचक रहा। यह आयोजन मुख्यत: गुरुग्राम में ही दो दिनों तक होगा।

-गजेन्द्र सिंह शेखावत

प्रेरक प्रसंग

निश्छल समर्पण का सुख

महान दार्शनिक सुकरात यूनान के गांवों का दौरा कर रहे थे उन्हें रास्ते में विभिन्न गांवों के लोग मिले। वे एक गांव में पहुंचे तो वहां अकाल ग्रस्त इलाके के ग्रामीण संसाधनों की कमी से जूझ रहे थे। एक ग्रामीण ने कहा कि महोदय हम सामर्थ्य न होते हुए आसपास के लोगों के लिए मदद जुटा रहे हैं। लेकिन इसके लिए हमें क्या मिलेगा? हम क्यों परेशान हो रहे हैं? तब सुकरात ने पास में कुएं से पानी खींचते हुए कहा कि जिस प्रकार यह रस्सी प्यासों को लगातार पानी पिलाते हुए कुएं की कनेर से रगड़ खाकर घिस जाती है और अंतत: टूट जाती है, लेकिन फिर भी अपना ऋषि कर्म नहीं भूलती है। यह प्यासों के लिए समर्पित रहती है। उसी प्रकार वृक्ष अपने फल नहीं खाते, नदी पानी नहीं पीती। लेकिन वे परमार्थ सुख प्राप्त करते हैं। उसी तरह तुम्हें भी दूसरों के लिए निश्छल भाव से स्वयं को अर्पित कर अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। वहां उपस्थित सभी ग्रामीण उनसे प्रेरणा लेते हुए अकाल पीड़ितों की मदद में जुट गए।

सामयिक

दिल्ली का विकास केजरीवाल सरकार के दौर में अवरुद्ध रहा है। जीत के बाद विजयी भाषण में प्रधनमंत्री मोदी ने यमुना को लेकर कई बड़े वादे किए हैं, जिनपर रेखा गुप्ता सरकार को खरा उतरना होगा। तय डेडलाइन पर यमुना का जीर्णोद्धार हो पाए इसका इंतजार दिल्ली की जनता कर रही है। दिल्ली की जनता यमुना नदी को अहमदाबाद की साबरमती नदी की तर्ज पर सौन्दर्यकरण के साथ विकसित होते हुए देखने को उतावली है। दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में इस वक्त सड़क कॉरिडोर प्रस्तावित है। इसके अलावा दिल्ली में कई स्थानों पर सड़कों का बुरा हाल है। इन सड़कों को दुरुस्त कराना भी एक बड़ी जिम्मेदारी होगी। दिल्ली में पूर्ववर्ती आप सरकार ने चार अस्पताल बनाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन इसे पूरा नहीं किया जा सकता है। वहीं, आयुष्मान आरोग्य मंदिर से जुड़ी योजना भी लागू करना होगा।

मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता के समक्ष चुनौतियां

ललित गर्ग

मोबाइल : 9811051133

भारतीय जनता पार्टी ने फिर एक बार दिल्ली मुख्यमंत्री के रूप में श्रीमती रेखा गुप्ता के नाम को लेकर न केवल चौंकाया बल्कि एक तीर से अनेक निशाने साधे हैं। रेखा गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाकर भाजपा ने एक साथ कई समीकरणों को साधने का प्रयास किया है। इस चौंकाने वाले फैसले के पीछे भाजपा की कई रणनीतियां हैं, एक तरफ जहां जातिगत समीकरणों को साधने की कोशिश है वहीं दूसरी तरफ नेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा को भी खत्म किया गया है। रेखा गुप्ता के रूप में भाजपा ने एक ऐसे चेहरे को आगे बढ़ाया है जो महिला सशक्तिकरण का प्रतीक भी है। रेखा गुप्ता भले ही पुरानी संघ के जुड़ी नेता रही हो, लेकिन उनका राजनीतिक अनुभव कोई बहुत ज्यादा नहीं रहा है। लेकिन भाजपा की इस नई तरह की राजनीति एवं सोच ने राजनीतिक दिग्गजों एवं कद्दावर नेताओं के स्थान पर नये चेहरों को आगे करके राजनीति की नई परिभाषा गढ़ती रही है, जो सफल भी रही है और राजनीति में परिवार एवं परम्परा को नकारा है। निश्चित ही अन्य राज्यों की भांति दिल्ली की मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता भी नया इतिहास का सृजन करते हुए विकास की नई गाथा लिखेंगी। दिल्ली से पहले भाजपा की 13 राज्यों और एक केंद्र शासित प्रदेश में सरकार थी लेकिन कोई भी महिला मुख्यमंत्री नहीं थी। दिल्ली में चौथी मुख्यमंत्री के रूप में भले ही रेखा गुप्ता का नाम राजनीति गलियारों में व्यापक चर्चा का विषय बन रहा हो, लेकिन राजनीति में महिलाओं के वर्चस्व को बढ़ाने की यह कोशिश अभिनन्दनीय एवं सराहनीय है।

राजस्थान, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और मध्यप्रदेश में भाजपा ने मुख्यमंत्री के नामों को लेकर चौंकाया था। लेकिन यह संदेश भी दिया था कि पार्टी में बड़ा चेहरा होना सब कुछ नहीं है। कर्मठ कार्यकर्ता होना बहुत कुछ है, जो बिना अभिमान पार्टी नेतृत्व के सोच को आसमानी ऊंचाई दे सकता है। रेखा गुप्ता शालीमार बाग सीट से जीतकर पहली बार विधायक बनी हैं। शुक्रवार को दिल्ली के रामलीला मैदान में रेखा गुप्ता ने नौवें मुख्यमंत्री के रूप में पद की शपथ ली, जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृहमंत्री अमित शाह के साथ अनेक राज्यों के मुख्यमंत्री उपस्थित रहे। रेखा गुप्ता पेशे से एक वकील हैं। भाजपा में उनकी गिनती अग्रणी नेताओं में होती है, वे दिल्ली भाजपा की महासचिव और भाजपा के महिला मोर्चा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भी हैं। रेखा गुप्ता का जन्म हरियाणा के जींद में हुआ था, लेकिन उनकी शिक्षा-दीक्षा दिल्ली में हुई है। रेखा गुप्ता से पहले सुषमा स्वराज, शीला दीक्षित और आतिशी इस पद पर रह चुकी हैं। रेखा गुप्ता पुरानी संघ से जुड़ी नेता रही हैं, दिल्ली यूनिवर्सिटी की छात्र संघ अध्यक्ष भी रह चुकी हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से अपना राजनीतिक सफर शुरु करने वाली रेखा गुप्ता कोमल स्वभाव, खुशमिजाज, संवेदनशील लेकिन बेबाकी, बेखौफ एवं बुलन्द आवाज में अपनी बात रखने का उनका माद्दा उनको एक खास पहचान देता है।

निश्चित ही दिल्ली का नया मंत्रिमण्डल सशक्त एवं कार्यक्षम है। वैसे एक बड़ी सच्चाई तो यही है कि दिल्ली की जीत अगर किसी एक चेहरे पर हुई थी, तो वह नरेंद्र मोदी थे। दिल्ली की जनता से मोदी ने जो वायदे किये हैं, उनको पूरा करने के लिये वे स्वयं दिल्ली पर निगरानी रखेंगे। उनका मार्गदर्शन एवं नेतृत्व ही दिल्ली के विकास की नई गाथा लिखेगा। प्रवेश वर्मा सहित छह लोगों को मंत्री पद की शपथ दिलाई गई। इस सूची में पंकज सिंह, आशीष सूद, रवींद्र इंद्रराज, कपिल मिश्रा और मनजिंदर सिंह सिरसा का नाम शामिल है। पंकज सिंह बिहार के रहने वाले हैं और राजपूत चेहरा हैं, इसके अलावा रविंद्र इंद्राज दलित चेहरा हैं, कपिल मिश्रा ब्राह्मण तो सिरसा सिख। भाजपा ने सभी वर्गों को मंत्रिमण्डल में जगह दी है।

मुख्यमंत्री के रूप में रेखा गुप्ता का सफर चुनौतीपूर्ण रहने वाला है, क्योंकि उनका उन सारी घोषणाओं और वादों को पूरा करना है, जो चुनाव के दौरान तीन किश्तों में जारी चुनाव घोषणा पत्र में किए थे और जिसे सभाओं में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने बार-बार दोहराया था। इनमें यमुना की सफाई, स्वच्छ पेयजल, साफ प्रदूषण रहित हवा दिल्ली को देना, प्रति वर्ष 50 हजार नई नौकरियों का सृजन, महिलाओं को प्रति माह 2500 रुपये देना, वृद्धों को पेंशन, मुफ्त बस यात्रा, नालों गलियों सीवर की सफाई, सड़कों की मरम्मत, ट्रैफिक जाम से निजात समेत आप सरकार की मुफ्त बिजली पानी जैसी लोकलुभावन योजनाओं को जारी रखना शामिल होगा। खासकर 15 साल तक मुख्यमंत्री रहीं और दिल्ली की सूरत बदलने वाली शीला दीक्षित के कामकाज से रेखा सरकार के कामकाज की तुलना होगी। इसके साथ ही रेखा गुप्ता को उपराज्यपाल और केंद्र सरकार के साथ तालमेल बिठाते हुए भी ये संदेश भी देना होगा कि वे कठपुतली मुख्यमंत्री नहीं हैं। इसके लिए उन्हें शीला और सुषमा का उदाहरण सामने रखकर नयी रेखाएं खिंचनी होगी। भले ही मुख्यमंत्री की घोषणा के साथ रेखा गुप्ता दिल्ली के दिलों पर छा गईं हो, एकाएक उनके फॉलोअर्स की रफ्तार देख हर कोई हैरान हो, उन्होंने दिग्गजों को पछाड़ा हो, लेकिन असली परीक्षा अब होगी और वह परीक्षा है उनका काम करने का तरीका एवं दिल्ली को दुनिया की अव्वल राजधानियों में शुमार कराने का।

रेखा गुप्ता के सामने विपक्ष आम आदमी पार्टी के आक्रामक विरोध से निपटने की भी चुनौती होगी। 22 विधायक और 43 फीसदी मत प्रतिशत वाली आप विधानसभा के भीतर बाहर सरकार के विरोध में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। इन बाहरी चुनौतियों के साथ ही पार्टी के भीतर वो नेता जिनकी नजर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर थी, उनके भीतरघात से भी सजग रहने व निपटने की चुनौती होगी। हालांकि, मौजूदा भाजपा नेतृत्व के दौर में भीतरघात बहुत असरदार नहीं बचा है, लेकिन इसके बावजूद भाजपा नेताओं की ही एक जमात उन्हें विफल होते भी देखना चाहेगी। मुख्यमंत्री को उन पर भी नजर रखनी होगी। आखिरी सबसे बड़ी चुनौती नौकरशाही पर सार्थक नियंत्रण और उसे जनोन्मुखी बनाने की होगी। साथ ही दिल्ली के सभी वर्गों समूहों और क्षेत्रों में संतुलन साधते हुए विकास करने की होगी। दिल्ली देश की राजधानी और केंद्र के सीधे नियंत्रण में है, इसलिए उनके हर काम पर देश एवं दुनिया के मीडिया के साथ-साथ केन्द्र की नजर रहेगी, इसलिए उन्हें फूंक फूंक कर कदम रखने होंगे।

दिल्ली का विकास केजरीवाल सरकार के दौर में अवरुद्ध रहा है। जीत के बाद विजयी भाषण में प्रधनमंत्री मोदी ने यमुना को लेकर कई बड़े वादे किए हैं, जिनपर रेखा गुप्ता सरकार को खरा उतरना होगा। तय डेडलाइन पर यमुना का जीर्णोद्धार हो पाए इसका इंतजार दिल्ली की जनता कर रही है। दिल्ली की जनता यमुना नदी को अहमदाबाद की साबरमती नदी की तर्ज पर सौन्दर्यकरण के साथ विकसित होते हुए देखने को उतावली है। दिल्ली के विभिन्न हिस्सों में इस वक्त सड़क कॉरिडोर प्रस्तावित है। इसके अलावा दिल्ली में कई स्थानों पर सड़कों का बुरा हाल है। इन सड़कों को दुरुस्त कराना भी एक बड़ी जिम्मेदारी होगी। दिल्ली में पूर्ववर्ती आप सरकार ने चार अस्पताल बनाने का लक्ष्य रखा था, लेकिन इसे पूरा नहीं किया जा सकता है। वहीं, आयुष्मान आरोग्य मंदिर से जुड़ी योजना भी लागू करना होगा।

दिल्ली में जिस प्रकार सार्वजनिक परिवहन की जरूरत बढ़ती जा रही है, उस अनुरूप बसों की संख्या बढ़ानी होगी। दिल्ली में कूड़े के पहाड़ और वायु प्रदूषण बड़ी समस्या रही है। भाजपा इन मुद्दों पर आप पर हमलावर रही है लेकिन अब जब खुद भाजपा सत्ता में आ गई है तो इसके लिए कोई बहाना दिल्ली की जनता को रास नहीं आएगा। वायु प्रदूषण के कारण ना केवल लोगों के स्वास्थ्य प्रभावित हो रहे हैं बल्कि बच्चों के स्कूल बीच सेशन बंद भी कराने पड़ते हैं। भाजपा ने चुनाव के वक्त अपनी पूर्ववर्ती आम आदमी पार्टी सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे। रेखा गुप्ता अपनी टीम की छवि कितनी साफ, अहंकारमुक्त एवं पारदर्शी रख पाती हैं, यह भी उनके लिए बड़ी चुनौती होगी। वहीं, आप सरकार में हुए कथित भ्रष्टाचार की जांच कराना भी इसकी जिम्मेदारी होगी। महिलाओं एवं युवाओं के मुद्दों को लेकर भी उन्हें संवेदनशीलता दिखानी होगी। निश्चित ही मुख्यमंत्री का ताज फूलों से ज्यादा कांटोंभरा ताज है, लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रयोगशाला में तपकर निकली रेखा गुप्ता दिल्ली के शासन को एक नई आभा देकर सभी चुनौतियों से पार पायेगी, इसमें सन्देह नहीं है।

नजरिया

बेटियों को पढाई के साथ चाहिए सुरक्षा और संरक्षा

बाल मुकुन्द ओझा

मोबाइल : 9414441218

हमारा देश गैर जरूरी मुद्दों पर जब देखों तब उबल पड़ता है। यहां हम बात कर रहे है महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षा की। मीडिया की ख़बरें बेहद चिंतित करने वाली है। इन ख़बरों पर गहनता से गौर करे तो पायेंगे देश में बेटियां आज भी सुरक्षित नहीं है। बेटियों की शिक्षा दीक्षा पर लोग आये दिन भाषण झाड़ते मिल जायेंगे, मगर मां बाप जबतक बेटी सुरक्षित घर नहीं लौट आये तब तक राहत की सांस नहीं लेती। भांति भांति के मुखोटे पहने दरिंदे बेटियों की अस्मिता को तार तार करने की ताक में रहते है। इन दरिंदों को समाज और कानून की कोई परवाह नहीं है। हकीकत यह है कि महिलाएं आज भी अपनी अस्मिता की रक्षा, न्याय और अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही है।

हमारे देश में महिलाओं को देवी के समान पूजने की परंपरा है। इसी देश में आज महिला अस्मिता के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। भारत में आए दिन महिलाएं हिंसा और अत्याचारों का शिकार हो रही हैं। घर से लेकर सड़क तक कहीं भी महिला सुरक्षित नहीं है। देश में महिला सुरक्षा को लेकर किये जा रहे तमाम दावे खोखले साबित हुए है। महिला सुरक्षा को लेकर देशभर से रोजाना अलग-अलग खबरें सामने आती रहती हैं। देश में महिलाओं की स्थिति पर हमेशा ही सवाल खड़े होते रहे हैं। महिलाओं की सुरक्षा के तमाम दावों और वादों के बाद भी उनकी हालत जस की तस है। महिलाएं रोज ही दुष्कर्म, छेड़छाड़, घरेलू हिंसा और अत्याचार से रूबरू होती

है। सच तो यह है कि एक छोटे से गांव से देश की राजधानी तक महिला सुरक्षित नहीं है। अंधेरा होते-होते महिला प्रगति और विकास की बातें छू-मंतर हो जाती हैं। रात में विचरण करना बेहद डरावना लगता है। कामकाजी महिलाओं को सुरक्षित घर पहुँचने की चिंता सताने लगती है। ऐसे में जरूरी है कि हम नारी समानता और सुरक्षा की बात पर गहराई से मंथन करें।

आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिति गौर करने के लायक है। आये दिन समाचार पत्रों में लड़कियों के साथ होने वाली छेड़छाड़ और बलात्कार जैसी खबरों को पढ़ा जा सकता है। राष्ट्रीय महिला आयोग की माने तो महिलाओं के खिलाफ अपराध बजाय कम होने के बढ़ते ही जा रहे है। इनमें सबसे अधिक मामले गरिमा के साथ रहने के हक के हनन का रहा यानी महिलाओं के शोषण के थे। देश में आए दिन महिलाएं हिंसा और अत्याचारों का शिकार हो रही हैं। घर से लेकर सड़क तक कहीं भी महिला सुरक्षित नहीं है। महिलाओं के साथ अत्याचार, शारीरिक शोषण और घरेलू हिंसा के मामले सामने आते हैं लेकिन शारीरिक शोषण के मामलों का ग्राफ काफी ऊपर है। यौन अपराधों पर सख्त कानूनों के बावजूद भी जमीनी स्तर पर कोई सुधार नहीं हुआ है। देश में यौन हिंसा के लगातार सामने आ रहे मामलों की वजह से महिलाओं के प्रति समाज के नजरिये पर फिर चर्चा शुरू हो गई है। पिछले कुछ अर्से में महिलाओं के साथ होने वाले बलात्कार, छेड़छाड़ और शोषण जैसे अपराधों में तेजी आई है। छोटे शहरों से लेकर बड़े शहरों में दर्ज होने वाले हाईप्रोफाइल मामले इसी का सबूत हैं।

भारत को संस्कार, संस्कृति और मर्यादा की त्रिवेणी कहा जाता है। भारतीय संस्कृति में नारी अस्मिता को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है- यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता। अर्थात जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। मगर आज सब कुछ उल्टा पुल्टा हो रहा है। न नारी की पूजा हो रही है और देवताओं की जगह सर्वत्र राक्षस ही राक्षस दिखाई दे रहे है। समाज के नजरिए में भी महिलाओं के प्रति अब तक कोई खास बदलाव देखने को नहीं मिला है।

आजकल रोज प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर महिलाओं के साथ दुष्कर्म और छेड़छाड़ की खबर दिखाई जाती रहती है परंतु इसकी रोकथाम के उपाय पर चर्चा कहीं नहीं होती है। इस तरह के अत्याचार कब रुकेंगें। क्या हम सिर्फ मूक दर्शक बन खुद की बारी का इंतजार करेंगे। लड़कियों पर अत्याचार पहले भी हो रहे थे और आज भी हो रहे हैं अगर इसके रोकने के कोई ठोस उपाय नहीं किये गये। आज भी हमारे समाज में बलात्कारी सीना ताने खुले आम घूमता है और बेकसूर पीड़ित लड़की को बुरी और अपमानित नजरों से देखा जाता है। न तो समाज अपनी जिम्मेदारी का माकूल निर्वहन कर रहा है और न ही सरकार। ऐसे में बालिका कैसे अपने को सुरक्षित महसूस करेगी यह हम सब के लिए बेहद चिंता की बात है।

सान्या मल्होत्रा का जादू जारी! मीनाक्षी सुंदरेश्वर और पगलैट ओटीटी पर ट्रेंड

सान्या मल्होत्रा न सिर्फ सिनेमाघरों में नहीं बल्कि ओटीटी पर भी अजेय अभिनेत्री साबित हो रही हैं! मिसेज में उनके प्रदर्शन के लिए अपार सराहना के बाद, दर्शक अब उनकी पिछली फिल्मों को फिर से देख रहे हैं, जिससे स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर मीनाक्षी सुंदरेश्वर और पगलैट ट्रेंड कर रही है।

सान्या मल्होत्रा ने एक भावनात्मक सोशल मीडिया स्टोरी के माध्यम से अपने प्रशंसकों को अपनी आभार व्यक्त की, आप सभी के प्यार और स्नेह के लिए बहुत आभारी महसूस कर रही हूं। तहे दिल से धन्यवाद। रिलीज से पहले ही मिसेज ने कई समारोहों में स्टैंडिंग ओवेशन और एक सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार के साथ काफी सराहना अर्जित की। अब प्रशंसक सान्या की पिछली भूमिकाओं में वापस देख रहे हैं, और उनकी बहुमुखी प्रतिभा को फिर से सराहना कर रहे हैं। आकर्षक मीनाक्षी सुंदरेश्वर से, जहां उन्होंने लॉन्ग डिस्टेंस की शादी को खूबसूरती से चित्रित किया। पगलैट में, जहां उन्होंने एक युवा विधवा के दुख से उबरते हुए अपने सूक्ष्म प्रदर्शन से दिल जीता है, सान्या की सिनेमाई यात्रा दर्शकों और आलोचकों को समान रूप से प्रभावित करती रही है। अब, मिसेज के ओटीटी पर स्ट्रीमिंग हो रही है और दर्शकों से लगातार प्यार मिल रहा है, उनकी पिछली परियोजनाओं पर नए सिरे से ध्यान एक कलाकार के रूप में उनके प्रभाव को और उजागर करता है। धर्मा प्रोडक्शंस के साथ उनके आगामी प्रोजेक्ट सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी का फैन बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं, जहां सान्या बिल्कुल अलग अवतार में नजर आएंगी। हर भूमिका में गहराई और प्रामाणिकता लाने की उनकी क्षमता उनकी पीढ़ी के सबसे आकर्षक अभिनेत्रियों में से एक के रूप में उनकी जगह को मजबूत करती है।

...जब हिमेश रेशमिया ने कीर्ति कुल्हारी की सलाह को नहीं माना
बैडएस रवि कुमार का रहीं हिस्सा

हिमेश रेशमिया ने खुद को हीरो लेकर एक फिल्म 'बैडएस रविकुमार' नाम की फिल्म बनाई। यह एक मसाला फिल्म थी। इस एक्शन फिल्म के डायलॉग ऐसे थे कि दर्शक हंस-हंसकर लोट-पोट हो गए। हाल ही में इस फिल्म में हिमेश के साथ एक्टिंग करने वाली एक्ट्रेस कीर्ति कुल्हारी ने बताया कि एक्टर ने उनकी एक जरूरी सलाह मनाने से इंकार दिया था।

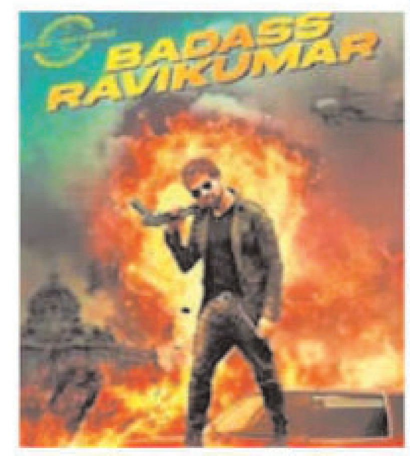

हिमेश ने नहीं मानी कीर्ति की बात

कीर्ति ने हालिया एक इंटरव्यू में बताया कि जब हिमेश को डायलॉग में कुछ सुधार करने के लिए, उसमें अपने लेवल पर इंप्रूव करने की बात कही तो उन्होंने इसके लिए साफ मना कर दिया। लेकिन इस तरह से हिमेश का रिएक्शन पाकर कीर्ति का बिल्कुल भी बुरा नहीं लगा।

फिल्म में कोई बदलाव नहीं चाहते थे हिमेश

कीर्ति को हिमेश रेशमिया की बात का बुरा इसलिए नहीं लगा क्योंकि उनका फिल्म को लेकर अपना एक अलग विजन था। वह इसमें किसी तरह का बदलाव नहीं चाहते थे। इस बात को कीर्ति ने समझा और जैसे डायलॉग लिखे गए थे, उन्हें वैसा ही बोला।

चर्चा में रही फिल्म

फिल्म 'बैडएस रविकुमार' भले ही बॉक्स ऑफिस पर नहीं चली हो। इसने महज 8 करोड़ रुपये की कमाई ही की है। लेकिन यह फिल्म सोशल मीडिया पर खूब छाई। इस फिल्म के अजीब से डायलॉग ही दर्शकों को पसंद आए। इन डायलॉग्स पर खूब फनी रील्स बनाई गई।

ये कलाकार भी आए नजर

फिल्म 'बैडएस रविकुमार' में हिमेश और कीर्ति कुल्हारी के अलावा प्रभु देवा, सिमोना जे, सौरभ सचदेवा, संजय मिश्रा और जॉनी लीवर भी हैं। पहले भी हिमेश रेशमिया कई फिल्मों में एक्टिंग कर चुके हैं, लेकिन उनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर चली नहीं हैं।

नाग अश्विन की फिल्म कर सकती हैं आलिया

लिया भट्ट इन दिनों संजय लीला भंसाली की फिल्म लव एंड वॉर की शूटिंग में व्यस्त हैं, जिसमें उनके साथ रणबीर कपूर और विकी कौशल नजर आएंगे। इस फिल्म की शूटिंग अक्टूबर 2025 तक पूरी होने की उम्मीद है। इसके बाद आलिया अपनी अगली फिल्म की तलाश में थीं और अब खबर है कि उनकी यह तलाश लगभग पूरी हो चुकी है। सूत्रों के मुताबिक, आलिया कल्कि 2898 एडी के निर्देशक नाग अश्विन के साथ एक नई फिल्म के लिए बातचीत के अंतिम चरण में हैं।

कल्कि 2 के पहले एक और फिल्म बनाना चाहते हैं नाग

सूत्रों के अनुसार, नाग अश्विन कल्कि 2898 एडी के अगले भाग से पहले एक नई फिल्म बनाना चाहते हैं, जिसमें आलिया मुख्य भूमिका में होंगी। इस प्रोजेक्ट की कहानी और जॉनर को फिलहाल गोपनीय रखा गया है। सूत्र ने बताया, नाग अश्विन एक ऐसी कहानी पर काम कर रहे हैं, जो उनके दिल के करीब है।

पहले लव... की शूटिंग पूरी करेंगी आलिया

फिलहाल, इस प्रोजेक्ट को लेकर बातचीत अपने अंतिम चरण में है लेकिन अभी तक पेपर वर्क पूरा नहीं हुआ है। इस फिल्म को हैदराबाद स्थित प्रोडक्शन हाउस वैजयंती फिल्म्स के बैनर तले बनाया जाएगा। आलिया पहले लव एंड वॉर की शूटिंग का शेड्यूल पूरी तरह क्लियर करना चाहती हैं, ताकि वह नवंबर से किसी नए प्रोजेक्ट को कमिट कर सकें। नाग अश्विन भी अपनी इस फिल्म को एक तय समय में पूरा करना चाहते हैं, क्योंकि 2026 के सेकंड हाफ में उन्हें कल्कि 2898 एडी 2 पर काम शुरू करना है। आलिया, अश्विन के साथ पहली बार काम करेंगी। दोनों की क्रिएटिव सोच मेल खा रही है और अब सिर्फ डेट्स और अन्य औपचारिकताओं को फाइनल किया जा रहा है। पिछले साल आलिया निर्देशक अभिषेक पाठक की रोमांटिक फिल्म हाउसवाइफ भी साइन करने के करीब थीं और इस पर बातचीत अभी भी जारी है। वहीं आलिया के खाते में अल्फा और चामुंडा भी हैं।

न 'मुल्क 2', न कोर्टरूम ड्रामा, अनुमानों से बिल्कुल अलग बनने जा रही अनुभव की नई फिल्म

नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज आईसी 814 के निर्देशन से अंतरराष्ट्रीय सिने जगत में अपनी धाक जमाने वाले भारतीय निर्देशक अनुभव सिन्हा की अगली फीचर फिल्म को लेकर सिने जगत में बीते कई दिनों से हलचल है। कोई कह रहा है कि ये फिल्म मुल्क का सीक्वल है, किसी ने अंदाजा लगाया कि ये फिल्म एक कोर्ट रूम ड्रामा बनने जा रही है, लेकिन अमर उजाला के पास इस बात की ठोस जानकारी है कि अनुभव सिन्हा की अगली फिल्म न मुल्क 2 है, और न ही ये एक कोर्ट रूम ड्रामा फिल्म होने जा रही है।

अनुभव सिन्हा की फिल्म निर्माण कंपनी बनारस मीडिया वर्क्स में इन दिनों शूटिंग शुरू होने से पहले की काफी हलचल बताई जा रही है। अनुभव अपनी राइटर्स टीम के साथ बीते एक महीने से दिन रात काम करते रहे हैं। अनुभव की ये आदत रही है कि जब तक फिल्म की कहानी उनको संतुष्ट नहीं करती है, वह शूटिंग शुरू नहीं करते हैं। इसके अलावा जिन्होंने भी उनका मुंबई में अंधेरी स्थित कार्यालय देखा है, वे बताते हैं कि उनको पढ़ने का बहुत शौक है। उनके दफ्तर की दीवारें किताबों से भरी नजर आती हैं।

अगले साल अनुभव सिन्हा की पहली फिल्म तुम बिन को रिलीज हुए 25 साल हो जाएंगे। उनके करीबी बताते हैं कि अनुभव सिन्हा अब जो भी फिल्में बना रहे हैं, वे अपने अनुभवों को अपने फिल्म निर्देशन की धार बनाकर ही बना रहे हैं। किसी विषय को लेकर जिद पर अड़ना वह छोड़ चुके हैं, और इसका सबसे बड़ा फायदा उनकी मेकिंग में दिखा वेब सीरीज आईसी 814 के दौरान। इस सीरीज के निर्देशन से राहत पाते ही अनुभव ने अपनी अगली फिल्म शुरू कर दी थी, जिसकी शूटिंग अब जानकारी के मुताबिक अप्रैल महीने में दिल्ली में होगी। अनुभव सिन्हा की गिनती हिंदी सिनेमा के उन नामचीन निर्देशकों में की जाती है, जिनके पास सिनेमा की विविधता है। वह तुम बिन, आर्टिकल 15, अनेक, भीड़ और थप्पड़ जैसी फिल्में निर्देशित कर चुके हैं और अब बताते हैं कि उनकी जो अगली अनाम फिल्म है, उसमें कोर्टरूम के दृश्य तो हैं, लेकिन इसे पूरी तरह से कोर्ट रूम ड्रामा नहीं कहा जा सकता है। सूत्र बताते हैं कि फिल्म का करीब 75 फीसदी हिस्सा कोर्ट रूम के बाहर शूट होना है।

भारत की पहली मल्टीवर्स सुपरहीरो फिल्म में नजर आएंगे निविन पॉली

मलयालम फिल्म इंडस्ट्री के चर्चित एक्टर निविन पॉली भारत की पहली मल्टीवर्स सुपरहीरो फिल्म मल्टीवर्स मनमथन में लीड रोल निभाएंगे। इस फिल्म का निर्देशन अदित्यन चंद्रशेखर करेंगे जो इससे पहले 2023 में आई फिल्म एकिलम चंद्रिके और 2019 की मिनी सीरीज एवरेज अंबिली बना चुके हैं। निविन ने लिखा... यह मेरे दिल के बहुत करीब है। भारत की पहली मल्टीवर्स सुपरहीरो फिल्म मल्टीवर्स मनमथन की घोषणा करते हुए बेहद उत्साहित हूं। फिल्म का निर्देशन अदित्यन चंद्रशेखर करेंगे ।

बड़े पर्दे पर किरदारों में ढल जाते हैं आशुतोष राणा, वेब सीरीज की दुनिया में भी छाए

बड़े पर्दे यानी फिल्मों में उम्दा अभिनय करने के लिए आशुतोष राणा जाने जाते हैं। जल्द ही ओटीटी पर रिलीज होने वाली फिल्म 'कौशलजी वर्सेज कौशल' में आशुतोष राणा नजर आएंगे। लेकिन वह ओटीटी पर कई वेब सीरीज भी कर चुके हैं। जानिए, उन वेब सीरीज के बारे में जिनमें आशुतोष राणा ने अपनी एक्टिंग से दर्शकों को प्रभावित किया।

मर्डर इन माहिम

साल 2024 में आई वेब सीरीज 'मर्डर इन माहिम' में आशुतोष राणा ने पीटर फर्नांडीज नाम का किरदार निभाया था। वह इसमें पत्रकार की भूमिका में नजर आए थे। इस वेब सीरीज में मर्डर मिस्ट्री को आशुतोष का किरदार कैसे सुलझा जाता है, यही सीरीज की कहानी थी।

खाकी-द बिहार चैप्टर

साल 2022 में 'खाकी-द बिहार चैप्टर' नाम की एक वेब सीरीज आई थी। इसमें मुख्य भूमिका यानी पुलिस वाले के रोल में करण टेकर थे। वहीं आशुतोष राणा ने आईजी मुक्तेश्वर चौबे का रोल किया था। आशुतोष राणा का देसी अंदाज दर्शकों को इस वेब सीरीज में खूब भाया।

द मिस्ट्री ऑफ मोक्षा आइसलैंड

यह वेब सीरीज तेलुगू भाषा में बनी थी, जो कि एक थ्रिलर सीरीज थी। इसमें आशुतोष राणा ने विश्वक सेन का किरदार निभाया था। इस सीरीज में दर्शकों को सस्पेंस, ड्रामा और थ्रिलर का कॉम्बिनेशन देखने को मिला। आशुतोष राणा भी अपनी एक्टिंग से दर्शकों को डराने में कामयाब रहे।

छत्रसाल-आरण्यक

वेब सीरीज 'छत्रसाल' में आशुतोष राणा ने मुगल शासक औरंगजेब का किरदार निभाया था। इस किरदार में वह काफी खूंखार नजर आए। यह वेब सीरीज राजा छत्रसाल की कहानी पर आधारित थी, उन्होंने मुगलों के खिलाफ एक लंबी लड़ाई लड़ी थी। वहीं रवीना टंडन स्टारर वेब सीरीज आरण्यक में भी आशुतोष राणा नजर आए। वह इस वेब सीरीज में महादेव डोगरा के किरदार में दिखे। यह सीरीज एक अपराधी को पकड़ने की कहानी कहती है। इसमें काफी सस्पेंस, ड्रामा दर्शकों को देखने को मिला था।

कृति सेनन ने शुरू की तेरे इश्क में की शूटिंग

कृति सेनन ने आनंद एल राय की फिल्म तेरे इश्क में की शूटिंग शुरू कर दी है, जिसमें वह पहली बार धनुष के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आएंगी। कृति ने तस्वीर साझा कर लिखा- चलो चलते हैं। सेट पर वापस आकर बहुत अच्छा लग रहा है। वह कर रही हूं जो मुझे सबसे ज्यादा पसंद है। इससे पहले, अभिनेता धनुष का सेट से वीडियो वायरल हुआ था, जहां उन्हें दिल्ली के एक कॉलेज में फिल्म की शूटिंग करते हुए देखा गया था। रांझणा (2013) और अतरंगी रे (2021) के बाद आनंद और धनुष एक बार फिर साथ काम कर रहे हैं। निर्देशक ने तेरे इश्क में और रांझणा के बीच विषय की समानताओं का संकेत दिया था, लेकिन आश्वासन दिया कि नई फिल्म एक अनूठी रचना होगी। कृति को आखिरी बार नेटफ्लिक्स फिल्म दो पत्ती में देखा गया था, जबकि धनुष ने रयान में अभिनय किया था, जिसे उन्होंने निर्देशित भी किया था।

मन की साधना

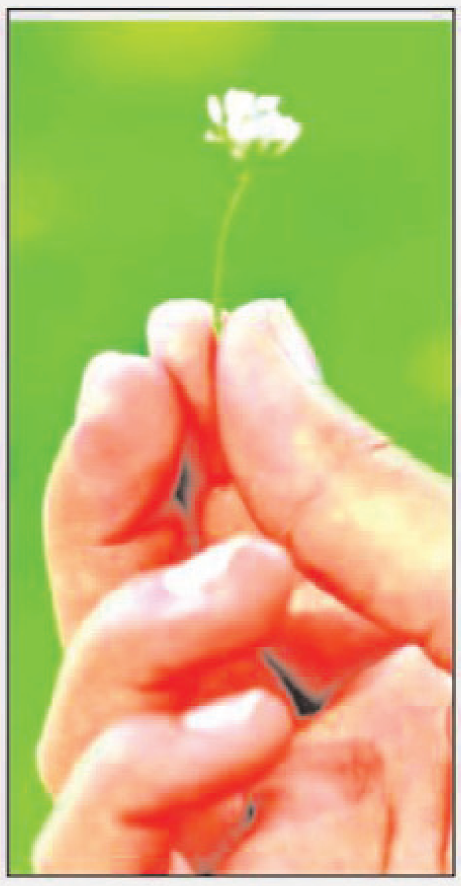

चतुर्मास का समय निकट आया तो भिक्षु सुशांत ने बुद्ध से आग्रह किया प्रभु, मैं नगरवधू सोमलता के सान्निध्य में अपना चतुर्मास व्यतीत करना चाहता हूं। कृपया इसकी आज्ञा प्रदान करें। यह सुनकर बुद्ध मुस्कराए। वह समझ गए कि यह वहां जाकर मन को साधकर सच्चा साधक होना चाहता है, लेकिन अन्य भिक्षुओं ने इस पर आपत्ति जताई। उन्हें संदेह था कि सुशांत कहीं अपने पथ से विचलित न हो जाए, पर बुद्ध ने भिक्षुओं के विरोध के बावजूद उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, जाओ और आगे बढ़कर आना। सुशांत सोमलता के पास पहुंचा। वहां सब उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गए। लेकिन सुशांत अपने संकल्प पर अडिग था।

इधर सोमलता के घुंघरुओं की आवाज गूंजती और उधर सुशांत अपनी साधना में लीन रहता। सोमलता सुशांत को रिझाने का प्रयास करती, मगर वह निर्लिप्त रहता। एक मास गुजर गया मगर सोमलता सुशांत को डिगा न सकी। हां, उससे थोड़ी सहानुभूति अवश्य होने लगी। उसने दूसरों को भी साधना के क्षणों में शांत रहने को कह दिया। चौथा मास आते-आते सुशांत ने अपने मन पर नियंत्रण पा लिया था। वह सोमलता या अन्य सुंदरियों की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखता था। संगीत उसे बुद्ध-वाणी की तरह लगता था और नृत्यालय देवालय की तरह। चार मास पूर्ण हुए और सुशांत अपने मठ की ओर वापस चला तो सबने आश्चर्य से देखा- भिक्षुणी बनी सोमलता उसके पीछे-पीछे अपना सर्वस्व त्याग कर जा रही थी। सोमलता अपने रूप-रंग से सुशांत को रिझा न सकी, मगर सुशांत के तप का प्रभाव सोमलता पर दिख रहा था। सुशांत वास्तव में आगे बढ़ गया था।

भाग्य और पुरुषार्थ

राजा विक्रमादित्य के दरबार में कई ज्योतिषी थे। मगर वह कोई काम शुभ लग्न देख कर या ज्योतिषी की सलाह लेकर नहीं करते थे। एक दिन राज ज्योतिषी उनके पास आए और बोले, महाराज, आप के दरबार में कई ज्योतिषी हैं। आप की तरफ से उन्हें सभी सुविधाएं मिली हुई हैं, पर आप कभी हमारी सेवाएं नहीं लेते। आज मैं आप की हस्तरेखा देख कर यह जानना चाहता हूं कि आप ऐसा क्यों करते हैं?

राजा ने कहा, मेरे पास इतना समय नहीं रहता कि मैं आप लोगों से सलाह ले सकूं। जहां तक हस्तरेखा की बात है तो मैं इसमें विश्वास नहीं रखता। लेकिन आप कह रहे हैं तो देख लीजिए। हाथ देख कर राज ज्योतिषी चक्कर में पड़ गए। उनकी आवाज बंद हो गई। राजा ने पूछा, क्या हुआ। आप इतने परेशान क्यों हैं? राज ज्योतिषी ने कहा, राजन्, आप की हस्तरेखाएं तो कुछ और कहती हैं। ज्योतिष के अनुसार आप को तो दुर्बल और दीनहीन होना चाहिए था। लेकिन आप तो इसके विपरीत हैं। हजारों साल से ज्योतिष विद्या पर विश्वास करने वाले लोग आपकी रेखाएं देख कर भ्रमित हो जाएंगे। समझ में नहीं आ रहा कि ज्योतिष को सच मानूं या आप की रेखाओं को। विक्रमादित्य ने कहा, अभी तो आप ने मेरे बाहरी लक्षणों को ही देखा है, अब आप हमारे अंदर झांक कर देखिए। इतना कह कर राजा ने तलवार की नोक अपने सीने में लगा दी। राज ज्योतिषी घबरा कर बोले, बस महाराज, रहने दीजिए।

राजा ने कहा- ज्योतिषी महाराज, आप परेशान मत हों। ज्योतिष विद्या भी तभी सार्थक सिद्ध होती है, जब मनुष्य में कुछ करने का संकल्प हो। हस्तरेखाएं तो भाग्य नहीं बदल सकतीं, लेकिन मनुष्य में यदि पुरुषार्थ है, अभाग्य से लड़ने की शक्ति है तो उसकी नकारात्मक रेखाएं भी अपने रूप बदल सकती हैं। लगता है मेरे साथ ऐसा ही हुआ है। राज ज्योतिषी अवाक हो गए।

गीता में है जीवन का ज्ञान

गीता डॉक्टर की भांति है। बस फर्क इतना ही है कि डॉक्टर शरीर के रोगों का इलाज करता है, जबकि गीता मन के रोगों का इलाज करती है और उन्हें दूर करने का मार्ग दिखाती है।

गीता का उपदेश जीवन की धारा है। चूंकि गीता में जीवन की सच्चाई छिपी है और इसमें जीवन में आने वाली दुश्वारियों के कारण व निवारण दोनों को ही विस्तार से समझाया गया है। इसलिए गीता के उपदेश विश्व भर में प्रसिद्ध हैं और हर वर्ग को प्रभावित करते हैं।

गीता डॉक्टर की भांति है। बस फर्क इतना ही है कि डॉक्टर शरीर के रोगों का इलाज करता है, जबकि गीता मन के रोगों का इलाज करती है और उन्हें दूर करने का मार्ग दिखाती है। जिस प्रकार डॉक्टर रोगी को रोग के निवारण के साथ-साथ उसके कारण भी बताता है। ठीक उसी प्रकार से गीता का अगर गहनता से अध्ययन किया जाए तो इससे मन के रोगों का कारण और निवारण दोनों का पता चल जाता है। गीता मन के रोगों को दूर करने का एक सशक्त माध्यम है।

गीता ज्ञान से मानव जीवन में मोह को भी आसानी से दूर किया जा सकता है। मोह जीवन लीला को धीरे-धीरे नष्ट कर देता है। जीवन में दुखों का सबसे बड़ा कारण मोह ही है। जीवन को अगर सफल बनाना है और मोह से मुक्ति पानी है तो गीता की शरण में जाना पड़ेगा। गीता से ज्ञान पा कर मानव मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। गीता का ज्ञान मनुष्य को उसकी आत्मा के अमर होने के विषय में बोध करवा कर अपने कर्तव्य कर्म को पूर्ण निष्ठा से करने को प्रेरित करता है। परमात्मा ने मनुष्य को देह केवल भोग के लिए प्रदान नहीं की है, अपितु हमें इसका उपयोग मोक्ष प्राप्ति के लिए करना चाहिए।

साधू व नदी कभी एक स्थान पर नहीं रुकते और निरंतर आगे बढ़ते हुए विभिन्न स्थानों पर जन-जन के हृदयों में अपने ज्ञान व भक्ति के प्रभाव से उन्हें लाभांवित व आनंदित करते हैं। प्रत्येक मानव को पूरी श्रद्धा व निष्ठा से पर-उपकार के लिए तैयार रहना चाहिए और अपने ज्ञान से जगत को प्रकाश मान करने का प्रयास करते रहना चाहिए, असल में यही मानव धर्म है।

अगर श्रीमद्भगवद् गीता का अध्ययन नित्य करें, तो इस बात का आभास सहजता से होता है कि उसमें सिखाया कुछ नहीं गया है, बल्कि समझाया गया कि इस संसार का स्वरूप क्या है? उसमें यह कहीं नहीं कहा गया कि आप इस तरह चलें या उस तरह चलें, बल्कि यह बताया गया है कि किस तरह की चाल से आप किस तरह की छवि बनाएंगे? उसे पढ़कर मनुष्य कोई नया भाव नहीं सीखता, बल्कि संपूर्ण जीवन सहजता से व्यतीत करने के मार्ग पर चल पड़ता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसमें एक वैज्ञानिक सूत्र है कि 'गुण ही गुणों को बरतते हैं।' इसका मतलब यह है कि जैसे संकल्पों, विचारों तथा कर्मों से आदमी बंधा है, वैसा ही वह व्यवहार करेगा। उस पर खाने-पीने और रहने के कारण अच्छे तथा बुरे प्रभाव होंगे। सीधी बात यह है कि अगर आप यह चाहते हैं कि अपने ज्ञान के आईने में आप स्वयं को अच्छे लगें तो अपने संकल्प, विचारों तथा कर्मों में स्वच्छता के साथ अपनी खान-पान की आदतों तथा रहन-सहन के स्थान का चयन करना पड़ेगा।

अगर आप आने अंदर दोष देखते हैं तो विचलित होने की बजाय यह जानने का प्रयास करें कि आखिर वह किसी बुरे पदार्थ के ग्रहण करने या किसी व्यक्ति की संगत के परिणाम से आया है। जैसे ही आप गीता का अध्ययन करेंगे, आपको अपने अंदर भी ढेर सारे दोष दिखाई देंगे और उन्हें दूर करने का मार्ग भी पता लगेगा।

गीता किसी को प्रेम करना, अहिंसा में लिप्त होना नहीं सिखाती, बल्कि प्रेम और अहिंसा का भाव अंदर कैसे पैदा हो, यह समझाती है। सिखाने से प्रेम या अहिंसा का भाव नहीं पैदा होगा, बल्कि वैसे तत्वों से संपर्क रखकर ही ऐसा करना संभव है। कोई दूसरे को प्रेम नहीं सिखा सकता, क्योंकि जिस व्यक्ति का घृणा पैदा करने वाले तत्वों से संबंध है, उसमें प्रेम कहां से पैदा होगा?

श्रीमद्भगवद् गीता में चार प्रकार के भक्त बताए गए हैं। भगवान की भक्ति होती है तो जीव से प्रेम होता है। अतः भक्ति की तरह प्रेम करने वाले भी चार प्रकार के होते हैं-आर्ती, अर्थार्थी, जिज्ञासु तथा ज्ञानी। पहले बाकी तीन का प्रेम क्षणिक होता है जबकि ज्ञान का प्रेम हमेशा ही बना रहता है। अगर आपके पास तत्व ज्ञान है तो आप अपने पास प्रेम व्यक्त करने वालों की पहचान कर सकते हैं, नहीं तो कोई भी आपको हांक कर ले जाएगा और धोखा देगा।

जीवन का आधार है आध्यात्मिक ऊर्जा

ऊर्जा एक ऐसी अदृश्य शक्ति है, जिसे हम देख नहीं सकते, बल्कि उसका अनुभव कर सकते हैं। यही ऊर्जा हमारे जीवन का आधार है।

विज्ञान की भाषा

विज्ञान इन अदृश्य शक्तियों को एनजी कहता है। उदाहरण के लिए बिजली से बल्ब जलता है, पंखे चलते हैं, लेकिन हम बिजली को कभी नहीं देख पाते हैं। हम उसका न केवल कार्य, बल्कि परिणाम भी देखते हैं। उसके स्वरूप के बारे में जान पाना कठिन है। ठीक उसी प्रकार प्रत्येक जीव में ऊर्जा मौजूद होती है, जिससे जीव में प्राण-शक्ति का संचार होता रहता है। दूसरे शब्दों में कहें, तो इस प्राण-शक्ति को हम देख नहीं पाते हैं।

संसार के सभी प्राणियों में ऊर्जा मौजूद है। वास्तव में यह ऊर्जा हमारे जीवन का आधार है। इसे हम अणु, परमाणु, एनर्जी आदि नामों से जानते हैं। यानी अपनी सुविधा के अनुसार, हम ऊर्जा को अलग-अलग नाम दे देते हैं। यह एक ऐसी अदृश्य शक्ति है, जिसका हम केवल अनुभव ही कर सकते हैं, देख नहीं सकते। हम अपनी आंखों से तो पृथ्वी पर मौजूद सभी पदार्थों को देख लेते हैं, लेकिन ऊर्जा को देख पाना हमारे लिए संभव ही नहीं हो पाता है। लेकिन उन्हें महसूस जरूर कर सकते हैं। लेकिन फिर भी इन अदृश्य शक्तियों के अस्तित्व को अस्वीकार कर पाना हमारे लिए असंभव होता है।

ऊर्जा और अध्यात्म का संबंध

अध्यात्म की भाषा में ऊर्जा को न केवल प्राण-वायु या आत्मा कहा जाता है, बल्कि जीव को ईश्वर का अंश भी माना जाता है। यह ऊर्जा ही है, जो सभी जीवों को जिंदा रखने में मदद करता है। हम देखते हैं कि अदृश्य शक्ति, यानी ऊर्जा के सहारे हमारे शरीर के सभी अंग सुचारू रूप से काम करते हैं। जैसे ही वह अदृश्य-शक्ति की लोप होती है, हमारे शरीर की सभी क्रियाएं बंद हो जाती हैं। शरीर के सभी अंग-आंख, नाक, कान, यहां तक कि इंद्रियां भी काम करना बंद कर देती हैं और शरीर निष्क्रिय हो जाता है।

हम यह सोचने के लिए मजबूर हो जाते हैं कि आखिर वह कौन सी शक्ति है, जो हमारे अंगों को संचालित करती है? आज का विज्ञान भले ही चांद, तारों और ग्रहों के बारे में हमें जानकारी देता हो, लेकिन आज भी इस अदृश्य-शक्ति को समझने की क्षमता अभी तक विज्ञान के पास नहीं है। शायद इसलिए कहा जाता है कि जहां विज्ञान की सीमा समाप्त हो जाती है, वहीं से महा विज्ञान शुरू हो जाता है। वास्तव में यह महाविज्ञान अध्यात्म है, जीवन दर्शन है। हमारा जीवन-दर्शन न केवल जीवन के अनुभवों के बारे में बताता है, बल्कि जीवन के रहस्यों को भी समझने का प्रयास करता है। यही वजह है कि इसकी पढ़ाई विद्यालयों या महाविद्यालयों में नहीं होती है। ऋषि-मुनियों ने वर्षों पूर्व ऐसे ही रहस्यों को समझने की कोशिश की थी। यदि इस रहस्य को समझने की स्थिति में जीव आ जाता है, तो उसे जीवन-शक्ति का अनुभव भी होने लगता है।

जीवन-शक्ति का अनुभव प्राप्त करने के लिए हमे सबसे पहले ऊर्जा के अदृश्य स्वरूप का अनुभव प्राप्त करना पड़ेगा, क्योंकि जैसा कि हम सभी जानते हैं कि जीवन-शक्ति का केवल अनुभव किया जा सकता है, देखा या परखा नहीं जा सकता है। हमारी आंखें देखती हैं, कान सुनता है, लेकिन इस देखने और सुनने की प्रक्रिया को हम केवल अनुभव कर सकते हैं। यदि हम अपने अनुभवों को न केवल अपने अंतर्मन में उतार लेते हैं, बल्कि इस प्रक्रिया के आदी भी हो जाते हैं, तो इसे ही साधना कहा जाता है। यह साधना ही है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन-शक्ति का अनुभव करने लगता है। इसके लिए हमें आत्म-केंद्रित होना अति आवश्यक होता है।

मिशन हरियालों राजस्थान के क्रियान्वयन के संबंध में बैठक आज

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निसं.)। मिशन हरियालों राजस्थान के क्रियान्वयन के संबंध में जिला कलक्टर शुभम चौधरी की अध्यक्षता में 24 फरवरी को प्रात: 11 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित की जाएगी।

जिला स्तरीय किसान सम्मान समारोह 24 फरवरी को

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निसं.)। अतिरिक्त निदेशक कृषि (विस्तार) कृषि आयुक्तालय राजस्थान जयपुर के आदेशानुसार जिला स्तरीय किसान सम्मान समारोह 24 फरवरी को दोपहर 2 बजे से अपरान्ह 3:30 बजे तक कृषि विज्ञान केन्द्र करमोदा में आयोजित किया जाएगा। संयुक्त निदेशक कृषि विस्तार राकेश कुमार अटल ने बताया कि जिला स्तरीय किसान सम्मान समारोह में 100 कृषकों का सम्मान किया जाएगा। वहीं पंचायत समिति सवाई माधोपुर, चौथ का बरवाड़ा, खण्डार, मलारना डूंगर, बौंली, गंगापुर सिटी एवं बामनवास में 50-50 कृषकों तथा प्रत्येक ग्राम पंचायत स्तर पर 30 कृषकों का सम्मान किया जाएगा।

हाईकोर्ट ने दिए ग्राम पंचायत की जमीन पर अतिक्रमण हटाने के आदेश

जयपुर टाइम्स

गुढ़ागौडजी(निस)। राजस्थान हाईकोर्ट ने पंचायत की आबादी भूमि पर अतिक्रमियों की ओर से किए गए अतिक्रमण को हटाने का आदेश जारी किया है। उच्च न्यायालय की ओर से जारी आदेश में बताया गया है कि ग्राम पंचायत नंगली दीपसिंह पटवार हल्का मैनपुरा, तहसील गुढ़ा गौड़जी के खसरा नं 21 व श्री कृष्ण नगर बड़ाऊ खेतड़ी के खसरा नं 521 की जमीन पर अतिक्रमण हटाने के लिए जनहित याचिका 12941/2024 पर हाइकोर्ट की ओर से 7 अगस्त 2024 को आदेश जारी किया गया। इस मामले में शिकायतकर्ता जगदीश पुत्र मूलाराम की ओर से एडवोकेट मनीष शर्मा ने पैरवी की।

जाट विकास संस्थान में नई कार्यकारिणी का गठन, सारण अध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर (निस)। शहर के जाट विकास संस्थान के सभागार हॉल में रविवार को महत्वपूर्ण बैठक हुई। रेवतराम बेनीवाल की अध्यक्षता में नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। एडवोकेट महेंद्र सींवर के नेतृत्व में 11 सदस्यीय कमेटी बनाई गई। कमेटी के सदस्यों ने सर्वसम्मति से दौलतराम सारण को अध्यक्ष और रेणुका चौधरी को महिला शाखा की अध्यक्ष चुना गया। दोनों पदाधिकारियों का माला और साफा पहनाकर स्वागत किया गया। महिला शाखा अध्यक्ष रेणुका चौधरी ने समाज को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। उन्होंने नशामुक्ति अभियान शुरू करने की भी घोषणा की। इस अभियान का उद्देश्य समाज को नई दिशा देना है। इस अवसर पर नगर परिषद सभापति राजकरण चौधरी, डेयरी अध्यक्ष लालचंद मूंड, भूमि विकास बैंक अध्यक्ष ईश्वरराम डूडी, पूर्व प्रधान सत्यनारायण सारण, प्रभुराम पुनियां, पूर्व मंडी अध्यक्ष इंद्राज सारण, मजीत बामल, एडवोकेट महेंद्र सींवर, हीरालाल बेनीवाल, प्रभुदयाल सिहाग, सरपंच भागीरथ सारण, लाभूराम सारण, रणवीर सारण, विजय पोटलिया, पूर्व उप प्रधान ताराचंद सारण, श्योकरण पोटलिया, चुन्नीलाल, भीमराज बेनीवाल, रामकरण बैदा, ओमप्रकाश सारण, रामजस चाहर, फ़ुसाराम हुड्डा, जयनारण बेनीवाल, महेंद्र पुनियां, हरलाल बेनीवाल, धनपत चौधरी, सरपंच लादूराम पुनियां, महावीर जाखड़, मुन्नीलाल सुंडा सहित बड़ी संख्या में लोगों ने दोनो पदाधिकारियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन इंद्राज सारण ने किया।

निशुल्क जांच व परामर्श शिविर में 125 से अधिक लाभान्वित

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के पेंशनर समाज भवन में नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर वासुदेव शर्मा शशि शर्मा की पुन्य स्मृति में आयोजित किया गया। शेल्बी हॉस्पिटल मस्टी स्पेशलिस्ट एव भागयश्री मेडिकोज़ आयुर्वेदा के संयुक्त तत्वाधान में शिविर आयोजित किया गया। शिविर में डॉ जलज मीणा स्पाइन सर्जन, डॉ चिन्मय शर्मा वरिष्ठ जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन व उनकी टीम की ओर से सेवाएं दी गई। इस अवसर पर विभिन्न रोगियों की जांचकर परामर्श दिया गया। शिविर का शुभारंभ पेंशनर समाज के अध्यक्ष देवीदत्त पारीक, मोहनलाल सेवदा, श्याम सुन्दर सेवदा, भगवती शंकर शर्मा, मंत्री जगदीश प्रजापत, कमल पुजारी पूर्व पार्षद ने सयुक्त रूप से किया गया। शिविर प्रभारी अमित शर्मा ने बताया कि इस शिविर में विभिन प्रकार के रोगों की जांच कर परामर्श दिया गया। शिविर में शहर व देहात के 125 से अधिक रोगियों का पंजीकरण किया गया। शिविर में सुरेन्द्र शर्मा, अरुण शर्मा, पार्थ सारथी, राजेश पुजारी, अशोक सोनी, श्याम तोषनीवाल, स्काउट गाइड सचिव बाबूलाल स्वामी, श्याम लाल अग्रवाल, एडवोकेट अश्विनी शर्मा, अशोक भोजक, एडवोकेट रमेश भोजक, दीनदयाल भोजक, राहुल पारीक सहित पेंशनर समाज के सदस्य व गोड़ विप्र महासभा के सदस्य उपस्थित रहे।

बजट घोषणाओं को समयबद्ध और प्रभावी ढंग से लागू करें : देवनारायण बोर्ड अध्यक्ष भडाणा

बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

सवाई माधोपुर(निसं.)। देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष एवं प्रदेश महामंत्री ओमप्रकाश भडाणा की अध्यक्षता एवं जिला प्रभारी सचिव एवं आयुक्त खाद्य सुरक्षा औषधि नियंत्रण एच. गुईटे की की उपस्थिति में रविवार को कलेक्ट्रेट सभागार में बजट घोषणाओं के त्वरित एवं समयबद्ध क्रियान्वयन हेतु जिला स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार आमजन के कल्याण के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का ध्येय है कि बजट घोषणाओं का तेजी के साथ क्रियान्वयन सुनिश्चित हो। देवनारायण बोर्ड के अध्यक्ष ओमप्रकाश भडाणा ने जिला स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मंशानुरूप बजट घोषणाओं को समयबद्ध और प्रभावी ढंग से धरातल पर उतारने के लिए पूर्ण गम्भीरता एवं तत्परता से कार्य करें, ताकि आमजन को इसका पूर्ण लाभ मिल सके। इस दौरान अध्यक्ष ने विभागीय अधिकारियों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करते हुए विकास कार्यों में पारदर्शिता और जवाबदेही का ध्यान रखने एवं सभी वर्गों के लोगों को समान अवसर प्रदान करने के निर्देश दिए। सभी अधिकारी अपने राजकीय दायित्वों का निर्वहन संवेदनशीलता और सजगता से करें और कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि बजट घोषणा अनुसार आवश्यक भूमि का चिन्हीकरण समय पर कर आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करें।

सरकार घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन को लेकर गंभीर

उन्होंने बजट घोषणा वर्ष 2024-25 की जिले से संबंधित सभी 62 घोषणाओं की क्रियान्विति व वर्तमान स्थिति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों से कहा कि उनके विभागों की बजट घोषणाओं को शत-प्रतिशत धरातल पर उतारने के लिए काम में तेजी लाए और किसी भी प्रकार की देरी या अड़चनों को तुरंत सुलझाने का प्रयास करें। जिले में अमरूद, आंवला, मिर्च के लिए फूड प्रोसेसिंग यूनिट स्थापित करने के लिए एमओयू, भाड़ौती में कृषि उपज मण्डी, बहरवाण्ड़ा खुर्द एवं शिवाड़ में खोले जाने वाले 132 केवी जीएसएस आदि के संबंध में भूमि आवंटन प्रशासनिक एवं विश्रीय स्वीकृति की जानकारी प्राप्त की। इसके साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की समीक्षा करते हुए योजना को धरातल पर उतारने के लिए अब तक किए गए प्रयासों की जानकारी लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। पीएचईडी के अधिकारियों को आगामी गर्मी के मौसम को देखते हुए पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए आवश्यक कार्यवाही एवं सुधार समय से पहले ही करने के निर्देश दिए जिससे कि आमजन को गर्मी में पेयजल को लेकर किसी भी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने बजट घोषणा 2025-26 के संबंध में भूमि आवंटन, चिन्हीकरण की स्थिति की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन कार्यो के लिए भूमि आवंटन की आवश्यकता है उनके प्रस्ताव शीघ्र भिजवाकर घोषणाओं की क्रियान्विति समयबद्ध व गुणवत्तपूर्ण सुनिश्चित करें। जिला कलक्टर शुभम चौधरी ने अध्यक्ष एवं प्रभारी सचिव को आश्वस्त किया कि सभी विभागीय अधिकारी सरकार के दिशा निर्देशों की अक्षरश: पालना करते हुए बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्विति सुनिश्चित करेंगे। बैठक में जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता, अतिरिक्त जिला कलक्टर संजय शर्मा, उप वन संरक्षक सुनील चौधरी, सीएमएचओं डॉ. अनिल कुमार जैमिनी, मण्डी सचिव दिलीप मीणा, अधीक्षण अभियंता जलदाय विभाग भगवान सहाय मीणा, उप जिलाध्यक्ष मानसिंह गुर्जर सहित संबंधित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

बजट में जिले को मिली सौगाते

सवाई माधोपुर में 400 केवी जीएसएस, गंगापुर सिटी चूली में 33/11 केवी जीएसएस

गंगापुरसिटी में ऑडिटोरियम, रोड़वेज बस स्टेण्ड, खेल स्टेडियम, महाविद्यालय स्तरीय बालिका छात्रावास, कृषि महाविद्यालय खोला जाएगा।

खण्डार में रामेश्वर घाट त्रिवेणी संगम का विकास, हेरिटेज ट्यूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए खण्डार किले का विकास

15 करोड़ रूपये की लागत से हम्मीर सर्किल से गणेशधाम सर्किल तक सड़क का उन्नयन

रणथम्भौर दुर्ग स्थित त्रिनेण गणेश मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु विभिन्न सुविधाएं

ग्रामीण ट्यूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए भूरी पहाड़ी को विकसित किया जाएगा

चकचैनपुरा हवाई पट्टी को बड़े हवाई जहाज उतरने योग्य बनाया जाएगा

शिवाड़ में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र भवन निर्माण कार्य करवाया जाएगा।

सवाई माधोपुर में खाद्य पदार्थों में मिलावट की रोकथाम एवं प्रभावी नियंत्रण के लिए खाद्य प्रयोगशाला

सवाई माधोपुर में विशेष न्यायालय (पोक्सो एक्ट) की स्थापना

घड़ियाल संरक्षण की दृष्टि से सवाई माधोपुर में पालीघाट के निकट घड़ियाल Rearing Centre स्थापित किया जायेगा।

श्री दादा सेसली पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियाँ जोरों पर

जयपुर टाइम्स

बाली/पाली(निसं.)। बाली स्थित श्री दादा सेसली पार्श्वनाथ भगवान के मंदिर में आगामी 23 फरवरी 2025 से भव्य आठ दिवसीय प्रतिष्ठा महोत्सव का शुभारंभ होने जा रहा है। इस भव्य आयोजन के लिए संघ, ट्रस्ट कमेटी, प्रतिष्ठा कमेटी सहित समाज के गणमान्य लोग पूरी लगन से तैयारियों में जुटे हुए हैं।

समाज की ओर से विशेष तैयारियाँ

प्रतिष्ठा महोत्सव के संरक्षक, तीर्थ अध्यक्ष श्री बाबुलालजी मंडलेशा और सचिव महोदय श्री कांतिलालजी किताबत के नेतृत्व में पूरे जोश और श्रद्धा के साथ तैयारियाँ की जा रही हैं। पूरे गोडवाड़ बाली क्षेत्र के गाँवों में इस महोत्सव को लेकर विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है।

नगर में भव्य सजावट और भक्तिमय माहौल

भामाशाहों द्वारा भी इस आयोजन को भव्य बनाने में योगदान दिया जा रहा है। नगर में घर-घर रोशनी और माला से सजावट की जा रही है। मंदिर को भव्य रोशनी और डेकोरेशन से सजाया गया है, जिससे संपूर्ण क्षेत्र एक अलौकिक वातावरण में डूब गया है।

भक्तों का आगमन शुरू, विशेष स्वागत की व्यवस्था

इस धार्मिक अवसर पर देशभर से श्रद्धालु बाली आने लगे हैं। श्रद्धालु इंदौर, फलना, मुंबई और अन्य राज्यों से बड़ी संख्या में यहाँ आ रहे हैं। आयोजन स्थल पर भक्तों के स्वागत और उनके ठहरने की विशेष व्यवस्थाएँ की गई हैं।

धार्मिक अनुष्ठान और गंगा स्नान का आयोजन

श्रद्धालु प्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान विशेष गंगा स्नान के लिए भी बड़ी संख्या में पधार रहे हैं। आयोजकों ने बताया कि ट्रेन, बस और निजी वाहनों से श्रद्धालु यहाँ पहुँच रहे हैं।

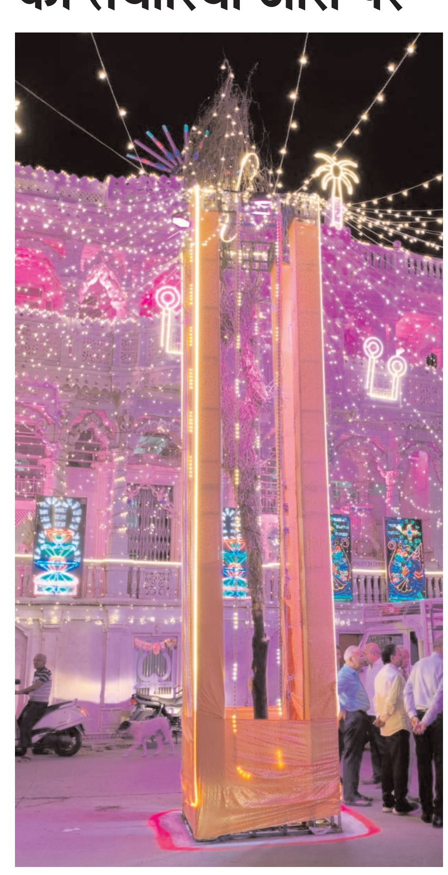

श्री बाबुलालजी मंडलेशा (मिट्ठी माँ) तन-मन-धन से समर्पित होकर दिन-रात तैयारी में जुटे हुए हैं। पिछले एक वर्ष से चल रही तैयारियों का अद्भुत नजारा अब श्रद्धालुओं के समक्ष आने वाला है।

श्रद्धालुओं से अपील

आयोजन समिति ने सभी श्रद्धालुओं से अनुरोध किया है कि वे इस महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में भाग लें और इस धार्मिक आयोजन का पुण्य लाभ प्राप्त करें।

जिला प्रभारी मंत्री ने ली जिला स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक

त्वरित एवं समयबद्ध रूप से हो बजट घोषणाओ का क्रियान्वयन-जिला प्रभारी मंत्री चौधरी

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निस.) जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भू-जल तथा जिला प्रभारी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने रविवार को बजट वर्ष 2025-26 की घोषणाओं के क्रियान्वयन के संबंध में नगर परिषद कुचामन के सभागार में जिला स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक में जिला प्रभारी मंत्री चौधरी ने विभिन्न विभागों की बजट घोषणाओं को लेकर संबंधित विभागीय अधिकारियों से कार्य प्रगति की जानकारी प्राप्त कर कहा कि बजट 2025-26 की सभी घोषणाओं की त्वरित एवं समयबद्ध रूप क्रियान्विती सुनिश्चित की जाये व सभी योजनाओं और परियोजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन हो। उन्होंने बैठक में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिए कि बजट में घोषित सभी योजनाओं और परियोजनाओं के कार्यों को निर्धारित समय सीमा के साथ गुणवत्तापूर्ण तरीके से पूरा किया जाए।जिला प्रभारी मंत्री चौधरी ने अधिकारियों से कहा कि बजट घोषणाओं की क्रियान्विति व सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ हर पात्र तक पहुंचाने को प्राथमिकता दे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार आमजन के कल्याण के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। मुख्यमंत्री का यही विजन है कि सभी बजट घोषणाओं को धरातल पर जल्द से जल्द उतारा जाए। जिला प्रभारी मंत्री ने पूर्व बजट की क्रियान्विति की समीक्षा करते हुए शेष कार्यों को समय पर पूरा करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित। साथ ही उन्होंने जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों को आगामी गर्मी के मौसम को देखते हुए जिले में पर्याप्त पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करते हुए आवश्यक कार्रवाई एवं सुधार समय से पहले ही करने के निर्देश दिए। बैठक में जिला कलक्टर पुखराज सेन ने विभागवार योजनाओं व विभिन्न कार्यों की प्रगति के बारे में प्रभारी मंत्री को अवगत कराया। बैठक में विभिन्न विभागों के अधिकारीयों ने अपने-अपने विभागों की कार्य प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस दौरान जिला कलेक्टर सेन ने अधिकारीयों को निर्देशित किया की बजट घोषणाओं के त्वरित क्रियान्वयन की दिशा में गंभीरता के साथ कार्य करें और बजट घोषणाओं को समय पर पूर्ण करें। बैठक में जिला प्रमुख भागीरथ चौधरी,जिला प्रभारी सचिव कन्हैया लाल स्वामी,जिला कलक्टर पुखराज सेन,जिला पुलिस अधीक्षक हनुमान प्रसाद, अतिरिक्त जिला कलक्टर कुचामन राकेश कुमार गुप्ता, जिलाध्यक्ष भाजपा सुनीता रान्दड, जितेंद्र सिंह जोधा, मकराना प्रधान सुनीता भींचर उप प्रधान डीडवाना ओमप्रकाश लील सहित जनप्रतिनिधिगण व जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

इल्म की शमा से ही मुस्तकबिल रोशन होता है - एमडी चोपदार

जयपुर टाइम्स

कुचामन सिटी(निसं.) इल्म की शमा से ही मुस्तकबिल रोशन होता है, लिहाजा अपनी ताकत और दौलत इल्म यानी तालीम हासिल करने में खर्च करो। ये कहना था राजस्थान मदरसा बोर्ड के अध्यक्ष एमडी चोपदार का जो कि रविवार को कुचामन सिटी में समाजिक संस्था मुस्लिम एजुकेशनल एंड वेलफेयर सोसायटी की और से आयोजित 15 वे प्रतिभा सम्मान समारोह 'एजुकेशन अवॉर्ड - 2024' में उपस्थित प्रतिभाओं और जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे । एजुकेशन अवॉर्ड 2024 में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 120 प्रतिभाओं का सम्मान कर हौसला अफजाई की गई । कार्यकम में मुख्य अतिथि राजस्थान मदरसा बोर्ड जयपुर, के अध्यक्ष एमडी चोपदार, रहे वही नगर परिषद कुचामन के सभापति आसिफ खान, राजस्थान खोखो फेडरेशन के सचिव डॉ. असगर अली, जिला शिशु कल्याण अधिकारी मोहम्मद इरफान, उप सभापति नगरपरिषद हेमराज चावला, न्यायिक सेवा अधिकारी जुबेर भाटी, जिला हज कमेटी के संयोजक मईनुद्दीन अशरफी, इकबाल खान असिस्टेण्ट प्रोफेसर मेडिकल कॉलेज चुरु

अनीस अली डीडवाना, विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ रहे

13 प्रतिभाओं को मिले सिल्वर मेडल

सोसायटी के सदर मोहम्मद शकील और सचिव अकीक अहमद उस्मानी ने बताया की हर साल की तरह इस बार भी सत्र 2023-2024 के लिए बोर्ड कक्षाओं एवं कॉलेज एजुकेशन के प्रतिभावान विधार्थियों के साथ और विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया । इसी के साथ समाज सेवा, खेल आदि क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले भी नवाजे गए । कुल मिलाकर इस कार्यक्रम में 120 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। जिसमें कक्षा 10 के 38, कक्षा 12 के 38 स्नातक एवं स्नातकोत्तर के 19 डिप्लोमा के 7,मेडीकल डिग्री के 4, खेल के 5, राजकीय सेवा में 2, विशेष सेवाओं हेतु 5 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। आयोजन की एक और खास बात विभिन्न श्रेणियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त 13 प्रतिभाओं को सिल्वर मेडल दिया गया। सोसायटी के सरवर तंवर ने बताया की कक्षा 10 की टॉपर आलिया अली, कक्षा 12 कला की टॉपर आलिया खान, कक्षा 12 की विज्ञान टापर अफसीन खान, कक्षा 12 कॉमर्स के टॉपर मोहम्मद आमीन, स्नातक कला वर्ग की टॉपर हीबा खान, स्नातक विज्ञान वर्ग की टॉपर अजरा कुरेशी, Bse. BEd की टॉपर शाहिन, BSc नर्सिंग टापर मोहम्मद इरफान, BEd के लिए ताहिरा भाटी MSc के लिए रोजमीन टाक, ढ्ढ्र्ढ हेतु अरबाज सोलंकी, लहरूहेतु मोहम्मद आबिद भाटी, BAMS ईशरत भाटी, को गोल्ड मेडल से नवाजा गया।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, बेटी खिलाओ - असगर अली

राजस्थान खोखो फेडरेशन के सचिव डॉ0 असगर अली ने अपने सम्बोधन में उपस्थित विधार्थियों की हौंसला अफजाई की ,और कहा की प्रशासनिक सेवाओं, मेडीकल सेवाओं या अन्य सरकारी सेवाओं के साथ-साथ खेलों मे भी कैरियर बनाया जा सकता है। संयमित, नियमित और व्यवस्थित दिनचर्या का पालन करते हुए कोई भी विद्यार्थी किसी भी खेल में अपना कैरियर बना सकता है। सभापति नगर परिषद कुचामन के सभापति आसिफ खान ने संबोधन में कहा कि कुरान मजीद मे जिन्दगी जीने और कामयाब होने का हर रास्ता अल्लाह तआला ने बताया है, जिन पर चलकर हम अपने भविष्य को संवार सकते हैं।

बेटियां आगे बढ़ रही ये खुशी की बात - एमडी चोपदार

मदरसा बोर्ड राजस्थान के चेयरमैन एमडी चोपदार ने अपने उद्बोधन में बताया कि खुशी है कि मुस्लिम समाज में भी शिक्षा के प्रति जागरूकता आ रही है और इससे भी ज्यादा खुशी इस बात की है कि समाज की बेटियां भी अब तालीम हासिल करने में पीछे नहीं है । उन्होंने कहा की समाज को आगे लाने और नई दिशा देने के लिए ऐसी सोसायटी की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने अभिभावकों से अपील की, कि वे अपने बच्चों को नैतिक सम्बलन प्रदान करते हुए उन्हे दीन व दुनिया की तालिम दिलवाएं जिससे की ये बच्चे अपने सपने और लक्ष्य को पूरा कर सके।नगर परिषद कुचामन सिटी के उप सभापति हेमराज चावला, डॉ0 इरफान, तथा न्यायिक अधिकारी जुबेर भाटी और डॉ. इकबाल ने भी सम्बोधित किया। मंच संचालन अजमत मौलानी एवं सरवर तंवर ने किया। साथ ही शब्बीर अली ने साउंड सिस्टम की सेवा उपलब्ध करवाई।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, सोमवार
24 फरवरी, 2025

चूरू की सांझी संस्कृति संपूर्ण देश के समक्ष एक मिसालः राठौड़

चूरू महोत्सवः दूसरे दिन कलाकारों ने किया हुनर का प्रदर्शन, पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, विधायक हरलाल आदि ने थिरकाए कदम

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। चूरू महोत्सव - 2025 आयोजन के दूसरे दिन रविवार को पुलिस लाइन मैदान में समारोह स्थल पर कला मंच में पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, विधायक हरलाल सहारण, जिला उप प्रमुख महेंद्र न्यौल आदि जनप्रतिनिधियों में शिरकत की। इस अवसर पर संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि चूरू महोत्सव अपने आप में अनूठा आयोजन है। यहां की सांझी संस्कृति संपूर्ण देश के समक्ष एक मिसाल है। हम अपनी गंगा - जमुना संस्कृति का हिस्सा बनें और भावी पीढ़ी को इन लोक रंगों से जोड़ें। चूरू महोत्सव के दूसरे दिन कला मंच पर पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, विधायक हरलाल सहारण, जिला उप प्रमुख महेंद्र न्यौल, वासुदेव चावला, बसंत शर्मा, मुकुल भाटी, बजरंग हर्षवाल आदि अधिकारियों व जनप्रतिनिधियों ने चंग, ढफ पर कदम थिरकाए और होली धमाल से गीतों की प्रस्तुति दी। इससे पूर्व अतिथियों ने राजीविका के राजसखी मेले और क्राफ्ट बाजार का अवलोकन किया।

कलाकारों ने किया हुनर का प्रदर्शन

समारोह के दूसरे दिन वादन प्रतियोगिता, कविता वाचन, मेहंदी प्रतियोगिता, नेल आर्ट और एकल नृत्य में प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक व साहित्यिक प्रस्तुतियां दी और अपने हुनर का प्रदर्शन किया। इस दौरान कला दीर्घा में पेंटिंग कलाकारों ने पेंटिंग कर अपनी कला का परिचय दिया।

विभिन्न प्रतियोगिता में यह रहे विजेता

चूरू महोत्सव के दौरान एकल नृत्य जूनियर वर्ग में कनिका चौधरी प्रथम, सौम्या शर्मा द्वितीय, पूर्विका शर्मा तृतीय, सीनियर वर्ग में श्रुति क्याल प्रथम, लक्ष्मी शर्मा द्वितीय, पारुल दर्जी तृतीय, वादन प्रतियोगिता में रितेश प्रजापत प्रथम, गोविंद कुमार द्वितीय, बजरंग कुमार हर्षवाल तृतीय, कविता वाचन प्रतियोगिता जूनियर वर्ग में मोसिका पारीक प्रथम, मोहम्मद शाहिद द्वितीय, फैसल व शिवालिक राठौड़ तृतीय, सीनियर वर्ग में तंजीम बानो प्रथम, यशवर्धन शर्मा द्वितीय और हिमांशु भारद्वाज ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी क्रम में विचित्र वेशभूषा सीनियर वर्ग में नीतू गोस्वामी प्रथम, सरिता स्वामी द्वितीय, संदीप सोनी तृतीय, जूनियर वर्ग में निधि जोशी प्रथम, श्रेष्ठा शर्मा द्वितीय, अभय सिंह राठौड़ व ज्योति तृतीय, रंगोली प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में वानिया प्रथम, सीनियर वर्ग में ममता बजाज प्रथम, कविता सोनी द्वितीय, कमलेश जांगिड़ तृतीय, मेहंदी प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में कनिष्का प्रथम, आरती नायक द्वितीय, प्रिया जांगिड़ तृतीय, सीनियर प्रतियोगिता में पल्लवी जांगिड़ प्रथम, ममता प्रजापत द्वितीय, मोनिका प्रजापत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

साहित्यकारों ने किया कविताओं का वाचन

चूरू महोत्सव के दूसरे दिन संवाद मंच में कविता वाचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिले भर जाए साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं की प्रस्तुति दी।

टेबलेट मिलने पर छात्राओं का सम्मान

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय हेतमसर की 14 बालिकाओं को झुंझुनूं जिला स्तर पर हुए सम्मान समारोह में स्कूल टेबलेट प्रदान कर सम्मान किया गया है। उल्लेखनीय है कि इस उपलक्ष में स्कूल परिवार की ओर से उक्त सभी बालिकाओं का अभिनंदन किया गया। प्रधानाचार्या सुमन शेखसरिया ने छात्राओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ सहित कई लोग उपस्थित रहे।

मंडावा में रंग रसिया कार्यक्रम 27 को

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निस)। कस्बे की होली विश्व प्रसिद्ध है और फागुन के महीने में मस्ती भरे कार्यक्रम ना हो तो लोगों के मन में एक टीस से बनी रहती है। समाजसेवी और हर समय तत्पर रहने वाले मनोज भादूपोता के सहयोग से फागुन की मस्ती से सरोबार रंग- रसिया कार्यक्रम 27 फरवरी को शाम 7 बजे से मंडावा में फतेहपुर बाईपास स्थित होटल मंडावा रिसोर्ट में आयोजित होगा। इस कार्यक्रम के आकर्षण का केंद्र शेखावाटी क्षेत्र का देश विदेश में गायकी के क्षेत्र में नाम रोशन करने वाले व होली धमालों की अलग अंदाज में प्रस्तुति देने वाले संजय बिर्क मुकुंदगढ़ अपनी टीम के साथ प्रस्तुतियां देंगे। कार्यक्रम आयोजन को लेकर रविवार को नगर पालिका अध्यक्ष नरेश सोनी की अध्यक्षता में होटल मंडावा रिसोर्ट में बैठक कर पूरी रूपरेखा तैयार की गई। इस दौरान राजेश रणजीरोत, मुकेश बुडानिया, सुशील लुहारूवाला, विशाल सैनी, आशु कालोया भी उपस्थित रहे। गौरतलब है कि लोक लाडले अंतरराष्ट्रीय गायक कलाकार संजय बिर्क राजस्थान की संस्कृति को जीवित रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और बिना सुर साज के आवाज इनकी दिल की गहराइयों में उतर जाती है। युवा दिलों की धड़कन बन चुके संजय बिर्क की होली धमाल ओर राजस्थानी लोकगीत मायड़ भाषा को बढ़ावा दे रहे हैं।

नि:शुल्क विटामिन डी-3 जांच शिविर आयोजित

जयपुर टाइम्स

नीमकाथाना(निंस)। जाँगिड हॉस्पिटल व ट्रॉमा सेंटर, नीम का थाना में नि:शुल्क विटामिन डी-3 जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में दूर-दराज से आए 52 मरीजों की विटामिन डी-3 जांच की गई। शिविर में प्रमुख रूप से डॉ. राजेश जाँगिड, वरिष्ठ हड्डी व जोड़ रोग विशेषज्ञ और डॉ. मौसमी जाँगिड, दंत रोग विशेषज्ञ ने मरीजों को परामर्श दिया। डॉक्टरों ने मरीजों को धूप सेवन, संतुलित आहार, दूध सेवन, योग और व्यायाम के माध्यम से हड्डियों और जोड़ो को मजबूत करने की सलाह दी। डॉ. जाँगिड ने बताया कि धूप सेवन से विटामिन डी-3 का निर्माण होता है और इसकी कमी से थकान, शरीर दर्द, कमजोर हड्डियाँ, कमर दर्द और जोड़ों में कमजोरी जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे फ्रैक्चर का खतरा भी बढ़ सकता है। इस शिविर में रमेश, कपिल, तेजवीर, रणवीर, कैलाश, समर्थ आदि ने अपनी सेवाएँ दी। शिविर का आयोजन हर महीने की 23 तारीख को नि:शुल्क किया जाता है।

एम्बुलेंस में लगी आग, चालक ने कूदकर बचाई जान

जयपुर टाइम्स

उदयपुरवाटी(निस)। कस्बे के निकट इंद्रपुरा स्टैंड पर शनिवार रात्रि को एक एम्बुलेंस में अचानक आग लग गई। आग की लपटें देख ड्राइवर ने चलती गाड़ी में कूदकर अपनी जान बचाई। घटना को देख स्थानीय लोगो ने पुलिस व अग्निशमन गाड़ी बुलाई। तभी तुरन्त पुलिस व अग्निशमन गाड़ी से फ़ायरमेनो ने एम्बुलेंस में लगी आग बुझाई। जानकारी के अनुसार एम्बुलेंस को मिस्त्री से सही करवाकर उसमे पेट्रोल डलवाकर पेट्रोल पंप से 200 मीटर दूर ही चला तभी गाड़ी में अचानक आग लग गई। तभी चालक ने गाड़ी को कच्चे रास्ते पर स्टेरिंग मोड़कर चलती गाड़ी में कूदकर अपनी जान बचाई। आग से गाड़ी अंदर से पूरी तरह जल चुकी थी। आग से कोई जान माल की हानि नही हुई। मौके पर पुलिस पहुँची। स्थानीय लोगो ने फायरमैनो की सराहना की आग की सूचना के बाद 10 मिनट में अग्निशमन गाड़ी पहुंचकर आग बुझा दी।

इस्लामपुर में उप प्रधानाचार्य अलका मीणा का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निसं.)। जिले के इस्लामपुर कस्बे में अलका मीणा का भव्य सम्मान किया गया.। कस्बे के सोंथलीया राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय इस्लामपुर मे कार्यरत उप प्रधानाचार्य अलका मीणा का सहायक प्रोफेसर उर्दू में चयन हुआ है जानकारी देते हुए प्रधानाचार्य रामकृष्ण महरिया ने बताया की उनके सम्मान में विद्यालय परिसर में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें माल्यार्पण कर सम्मान किया गया इस अवसर पर पुष्पांजलि चौधरी, रविंद्र कुमार, संतोष, अंशु शेखर, बबीता कुमारी, इरम खान सुनीता कुमारी इत्यादि सहित समस्त स्टाफ उपस्थित था अलका ने अपनी सफलता का श्रेय पिता अमर सिंह मीणा एवं माता विमला देवी को दिया है

शिक्षा एक ऐसी चाबी है जो हर ताले के लग सकती है। अलका मीणा

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। जिला मुख्यालय के निकटवर्ती भीमसर ग्राम की बेटी अलका मीणा का सहायक प्रोफेसर उर्दू में चयन हुआ है। इस अवसर पर अलका ने अपने संदेश में कहा कि शिक्षा ही एक ऐसी चाबी है जो हर ताले के लग सकती है शिक्षा से कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाता है और उन्होंने कहा कि जो देश महिला शिक्षा की दृष्टि से अग्रणी होगा वह देश सदा तरक्की के पथ पर रहेगा। आज हमारे देश की महिलाएं पुरुषों के बराबर कंधे से कंधा मिलाकर देश हित में कार्य कर रही है । इस अवसर पर उनके पिता अमर सिंह मीणा प्रशासनिक अधिकारी (एल आईसी), ने कहा की बेटी और बेटा में कोई भेद नहीं है बेटियां भी समाज और देश की तरक्की में अमिट छाप छोड़ती हैं । इस अवसर पर अलका की माता विमला देवी, अभिषेक कुमार , नम्रता, अमला कुमारी, दीप ज्योति, अक्षय कुमार, मनीषा , सहित जिले भर से उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए बधाई एवं शुभकामनाएं दी है।

शिव मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा को लेकर धार्मिक कार्यक्रम जारी

जयपुर टाइम्स

मंडावा(निसं.)। कस्बे के वार्ड नंबर दो में ब्रह्म बगीची शिव मंदिर में रविवार को विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित हुए। पंडित प्रदीप शर्मा फतेहपुर वाले के सानिध्य में फलादीवास हवन, पंच कुंडीय यज्ञ, जप व रुद्री पाठ का आयोजन किया गया। अमित बुडानिया ने बताया कि 25 फरवरी को सुबह सवा 9 बजे कलश यात्रा व मूर्ति नगर भ्रमण और ओमकारा आर्ट सरसा पार्टी की ओर से भव्य झांकी और नृत्य, रात्रि में भजन संध्या होगी। 26 फरवरी को सुबह सवा 10 बजे मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा और शिव अभिषेक व शाम को 4 बजे सियाराम जी की बगीची से शिव बारात प्रस्थान करेगी और इस दौरान सरसा की पार्टी की ओर से शिव तांडव, अघोरी नृत्य व विशेष झांकियां आकर्षण का केंद्र होगी और 27 फरवरी को भंडारा होगा। भूमि पूजन कार्यक्रम के दौरान अमित बुडानिया, पार्षद राजकुमार सैनी, मुकेश बुडानिया, बनवारी लाल, बाबूलाल नेमीवाल, चांद बिहारी गुर्जर, नरोत्तम कुमावत, सुरेश सैनी, मनोज शर्मा, नरेंद्र शर्मा, श्रीराम सैनी, राकेश तुनवाल, अशोक शर्मा, नरेश सैनी, दिनेश प्रजापति, शंकर लाल राकसिया, विष्णु शर्मा, जुगल किशोर शर्मा, विष्णु शर्मा सहित अन्य उपस्थित रहे।

ईमानदारी की मिसाल सड़क पर मिला मोबाइल, मालिक को लौटाया

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के रेलवे स्टेशन के पास सड़क पर रविवार को पुनुसर निवासी युवक राम कस्वां को एक मोबाइल गिरा हुआ मिला। मोबाइल चालू स्थिति में होने के कारण मोबाइल पर जब फोन आया तो मोबाइल मालिक रामनगर बास निवासी पवन माली ने राम कस्वां से कहा की यह मोबाइल मेरा है। युवक राम कस्वां ने ईमानदारी का

परिचय देते हुए पवन माली को पुलिस थाने में आकर मोबाइल लेने के लिए कहा। दोनों पुलिस थाने पहुंचे और पुलिस के समक्ष राम कस्वां ने ईमानदारी का परिचय देते हुए उक्त मोबाइल पवन माली को सुपुर्द कर दिया। पवन माली ने बताया कि वह रेलवे स्टेशन के पास से गुजर रहा था तब जेब से उसका मोबाइल सड़क पर गिर गया। वहीं राम कस्वां ने कहा कि मोबाइल सही व्यक्ति तक पहुंचे उसके लिए उसने पुलिस थाने में पुलिस के समक्ष यह मोबाइल पवन माली को दिया है। मोबाइल के मालिक पवन माली ने ईमानदारी का परिचय देने वाले राम कस्वां का आभार प्रकट किया।

भाजपा के नव नियुक्त प्रदेशाध्यक्ष का स्वागत

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ के फिर से भाजपा प्रदेशाध्यक्ष बनने पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्यारेलाल ढूकिया ने जयपुर में उनका स्वागत किया। इस दौरान ढूकिया ने जिले के विकास कार्यो को लेकर चर्चा की और संगठन के बारे में चर्चा की।

सीओ कालावत बार टू मेडल ऑफ मेरिट अवार्ड से सम्मानित

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड के राज्य स्तरीय पुरस्कार अवार्ड समारोह में सीओ स्काउट महेश कलावत को सम्मानित किया गया। इसी तरह झुंझुनूं जिले को तीन धन्यवाद बैज मिले। प्रोग्राम में राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े और स्टेट चीफ कमिश्नर निरंजन आर्य मौजूद रहे। झुंझुनू जिले में उल्लेखनीय व उत्कृष्ट ढांचागत विकास में 5 लाख से अधिक राशि का सहयोग करने पर झुंझुनू के पूर्व सांसद नरेंद्र कुमार खींचड़, एडीसी गाइड स्थानीय संघ बुहाना अनुकंपा अरड़ावतिया (प्रधानाचार्य) राबाउमावि खानपुर मेहराणा, सचिव स्थानीय संघ बुहाना प्रवीण कुमार, (वरिष्ठ अध्यापक) राउमावि डूमोली खुर्द को धन्यवाद बैज से सम्मानित किया। एक करोड़ से ज्यादा के विकास कार्यों व उत्कृष्ट व उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सी.ओ. स्काउट महेश कालावत को बार टू मेडल ऑफ मेरिट अवार्ड से राज्यपाल ने सम्मानित किया। इस अवसर पर इस उपस्थित स्काउट गाइड को संबोधित करते हुए राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए हमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक तथा तकनीकी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करनी होगी। उन्होंने कहा कि स्काउट गाइड के माध्यम से राष्ट्रवाद से परिपूर्ण सुयोग्य नागरिकों का निर्माण किया जा रहा है।

धाँधेला में क्लस्टर स्तरीय साक्षरता कार्यशाला आयोजित

जयपुर टाइम्स

नीमकाथाना/पाटन, (निंस.)। पाटन नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत ब्लॉक पाटन के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय धाँधेला में क्लस्टर स्तरीय सर्वेयर शिक्षकों व स्वयंसेवी शिक्षकों की एक दिवसीय आमुखीकरण प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता क्लस्टर प्रभारी विद्यालय के प्रधानाचार्य व पीईईओ महेश कुमार खुडाणिया ने की। कार्यशाला में ब्लॉक पाटन के 6 ग्राम पंचायतों धाँधेला, राजपुरा, पाटन, हसामपुर, छाजा की नांगल, डूंगा की नांगल से कुल 78 सर्वेयर शिक्षक व स्वयंसेवी शिक्षक संभागियों ने भाग लिया। ब्लॉक समन्वयक साक्षरता शिम्भु दयाल स्वामी ने संभागियों को नवभारत साक्षरता कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि आज के समय में साक्षरता केवल अक्षर ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें असाक्षर व्यक्तियों को बुनियादी साक्षरता, संख्यात्मक ज्ञान, जीवन कौशल, बुनियादी शिक्षा, व्यावसायिक कौशल विकास और सतत शिक्षा प्रदान करना भी शामिल है। अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी महेश कुमार मीणा ने नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के महत्व पर जोर दिया और समाज से निरक्षता को समाप्त करने की दिशा में सभी को मिलकर ईमानदारी से काम करने का आह्वान किया। कार्यशाला के अंत में, पीईईओ महेश कुमार खुडाणिया ने नवभारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत सर्वेयर शिक्षकों और स्वयंसेवी शिक्षकों के दायित्वों पर विस्तार से चर्चा की और सभी संभागियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम के सफल संचालन का आवाहन किया।

वार्षिकोत्सव व प्रतिभा सम्मान समारोह कल

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। राजस्थान पब्लिक उमावि, मण्डावा का वार्षिकोत्सव व प्रतिभा सम्मान समारोह 25 फरवरी को सुबह दस बजे धूमधाम से मनाया जाएगा। स्कूल निदेशक व शिक्षाविद्ध हरलालसिंह मोगा ने बताया कि इस मौके पर स्कूली विद्यार्थियों की ओर से शानदार रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतिया दी जाएगी और प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित किया जाएगा।

गेनाणी का नाला टूटने से हाईवे पर फैला गंदा पानी, आमजन परेशान

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के बीकानेर रोड़ दिल्ली हाईवे पर कल्याणपुरा फांटे के पास गेनाणी का नाला टूटने से हाईवे पर गंदा पानी फैलने से आसपास के दुकानदारों एवं राहगीरों को भारी परेशानी हो रही है। यहां के दुकानदारों ने बताया कि यह नाला इस माह में तीसरी बार टूटा है। इसके टूटने से फैल रहे पानी के कारण भयंकर बदबू का वातावरण हो रहा है। जिसके कारण श्वांस लेना मुश्किल हो रहा है। लोगों ने बताया कि बापा सेवा सदन गेनाणी, बहादुर सिंह कॉलोनी गेनाणी सहित तीन छोटी गेनाणियों का गंदा पानी पम्पिंग कर इस पाईप लाईन से रेलवे फाटक के पास बनी मुख्य गेनाणी में भेजा जाता है। यहां एक माह पूर्व इस पाईप लाईन में लिकेज हुआ था। जिससे नगरपरिषद द्वारा ठीक करवाया गया। लेकिन बार बार पानी के प्रेशर से पाईप टूट रहा है। जिसके कारण पूरी सड़क पर गंदगी फैल रही है। नगरपरिषद शिघ्र इसका स्थाई समाधान करवाकर आमजन को राहत प्रदान करें।

अधर्म का नाश करने के भगवान लेते हैं अवतार- कृष्णानन्द

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के लिलीया कुंआ के पास पेड़ीवाल परिवार की ओर से आयोजित श्री भागवत कथा में व्यासपीठ पर विराजमान श्री कृष्णा नन्द महाराज ने भगवान श्री कृष्ण के दिव्य जन्मोत्सव का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि जब-जब धरती पर पाप बढ़ता है तब-तब भगवान अवतार लेकर भूमि को पाप के भार से मुक्त करते हैं और धर्म की स्थापना करते हैं। भगवान श्री कृष्ण परम योगेश्वर हैं। उनका जन्म मनुष्य के भीतर व्याप्त अज्ञान रूपी अंधकार का नाश कर आध्यात्मिक चेतना जागृत करने के लिए ही हुआ है। जिस प्रकार वसुदेव जी ने भगवान को अपने सिर पर धारण किया तो उनकी हथकड़ियां बेड़िया टूट गई और कारागार के द्वार अपने आप खुल गये उसी प्रकार मनुष्य भगवान के शरणागत होकर उनको शिरोधार्य करता है तो वह समस्त भव-बंधन व सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। कथा के मध्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान की दिव्य कथा सुनकर सभी भक्त भाव-विभोर हो गए। कथा में महावीर पेड़ीवाल, हिम्मत सिंह राजवी, बालकृष्ण पटवारी, जयकिशन पारीक, संदीप कंदोई, परमेश्वर नवहाल, जयकांत बिंवाल, राजकुमार लखोटिया, गोपाल चौहान, निरंजन जांगिड़, सुशील गट्टानी, हनुमान मोदी, अश्विनी राठी, अनिल जाजू, ओमप्रकाश चौहान, हनुमान बजाज सहित बड़ी संख्या में महिलाएँ उपस्थित रहीं।

मानव सेवा संस्थान में रक्त जांच शिविर 26 को

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। स्थानीय लुहारा गाडा स्थित मानव सेवा संस्थान परिसर में मानव सेवा संस्थान कोलकाता- सुजानगढ़ व सुजानगढ़ नागरिक परिषद कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में पन्नालाल सारडा की स्मृति में पुरुषोत्तम सारडा के सौजन्य से नि:शुल्क रक्त जांच शिविर का आयोजन 26 फरवरी को किया जाएगा। शिविर में सीबीसी, शुगर, कोलेस्ट्रॉल व थायराइड की जांच नि:शुल्क की जाएगी। शिविर में सहयोगी संस्था डॉक्टर छाबड़ा मेडिकल एंड वैलनेस सेंटर है।

शिविर में 219 की जांच कर 41 का ऑपरेशन के लिए चयन

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़.(नि.सं.)। द् यंग्स क्लब ऑफ सुजानगढ की ओर से कमलेश भरत डूंगरवाल सुजानगढ़ निवासी बेंगलूरु प्रवासी के सौजन्य व क्लब अध्यक्ष निर्मलकुमार भूतोड़िया की प्रेरणा से रविवार को नि:शुल्क नेत्र जांच व लैंस प्रत्यारोपण शिविर आयोजित किया गया। क्लब के सांस्कृतिक सचिव गिरधर शर्मा ने जानकारी दी कि उक्त शिविर में प्रख्यात नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ अपूर्व कोटिया की ओर से 219 नेत्र रोगियों की नि:शुल्क जांच करके 41 मोतियाबिंद रोग के आपरेशन लायक रोगियों का चयन किया गया। चयनित नेत्र रोगियों के नि:शुल्क लेंस प्रत्यारोपण डॉ कोटिया की ओर से डॉ मोहन जैन आई हॉस्पिटल में नि:शुल्क करवाए जाएंगे। शर्मा ने बताया कि शिविर में चूरू, नागौर व सीकर जिलों के 135 शहरी व 84 ग्रामीण क्षेत्रो के रोगियों की नि:शुल्क नेत्र जांच कर उन्हें नि:शुल्क दवा दी गई। शिविर के उद्घाटन अवसर पर डॉ. सरोज कुमार छाबड़ा, कमला सिंघी, सुमित पाटनी, अब्दुल करीम खिंची, गजानंद जांगिड़, हरि तोदी, राजकुमार क्याल ने दीप प्रज्वलित कर शिविर का विधिवत शुभारम्भ किया। द् यंग्स क्लब ट्रस्ट सभागार सुजानगढ में आयोजित हुए शिविर को सफल बनाने में दानमल शर्मा, गोपाल चोटिया, विमल भूतोड़िया, हाजी मोहम्मद, ललित सोनी, माणक रामपुरिया, संतोष बेड़िया, गिरधर भोजक, मूलचन्द् तिवाड़ी, योगेन्द्र भोजक आदि ने योगदान दिया। शिविर में रमण प्रजापत, रामगोपाल शर्मा, रतनलाल प्रजापत, रामचन्द्र टेलर, मंगलाराम, मालचंद प्रजापत ने सेवाएं दी।

बजट आवंटन में भेदभाव, चूरू का विकास अवरुद्ध: न्यौल

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। अखिल राजस्थान किसान मजदूर कर्मचारी संयुक्त महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष व कांग्रेस जिलाउपाध्यक्ष किसान नेता आदूराम न्यौल ने राज्य सरकार पर चूरू के बजट आवंटन में भेदभाव के गंभीर आरोप लगाए। किसान नेता न्यौल ने बताया कि विधानसभा में बजट आवंटन करते समय चूरू के कलेक्टर कार्यालय को ही बजट से वंचित कर दिया तो आम जनता को राहत की क्या उम्मेद होगी। आयुर्वेद महाविद्यालय का बजट नहीं मिलने से आयुर्वेद प्राचीन चिकित्सा पद्धति तकनीक विज्ञान का विशेष कैसे होगा। आर ओ बी की मरम्मत का बजट आवंटित नहीं करने से भारी वाहनों को 15 किलोमीटर का चक्कर लगाकर आना जाना पड़ रहा है। विगत 5 वर्ष से कितना बड़ा राजस्व का नुकसान हुआ इसका आकलन लगाना दूर की कोड़ी साबित होगा। चूरू में रिंग रोड़, गड़सर गैनाणी का बजट में कोई प्रावधान नहीं रखा गया जिससे चूरू का विकास अवरुद्ध होगा ही होगा। न्यौल ने आज मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा व वित्त मंत्री दिया कुमारी को अलग-अलग ज्ञापन परीक्षित प्रेषित कर मांग चूरू के विकास के लिए बजट शीघ्र आवंटित करवाने की मांग की। चूरू के विकास की अनदेखी करना किसी भी राजनीतिक पार्टी के लिए अच्छे शगुन नहीं है। इसके लिए चूरू की जनता अपने अधिकारों को प्राप्ति के लिए ईंट से ईंट बजाने को तैयार है। भरी संख्या में चूरू के नवयुवक दस दिन बाद विधानसभा का घेराव करेंगे। ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने वालों में एनएसयूआई जिलाध्यक्ष रामानंद न्यौल, किशनाराम बाबल ,श्रवण बसेर, धर्मेंद्र ढाका, अली हसन, सोहनलाल मेघवाल, प्रेम नायक, प्रताप कांटीवाल, पूर्व सरपंच दुलाराम मेघवाल, मुराद खान, संदीप , मनोज राहड़ सहित अनेक कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने चूरू के विकास में रोड़ा अटकाने वाली भाजपा सरकार को मुंह तोड़ जवाब देने के लिए अधिकाधिक संख्या में जयपुर पहुंचने का आव्हान किया।

श्रीरामकथा: लंका दहन और रावण वध का किया वर्णन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर के ताल मैदान में गुरु गोरखनाथ जी जाहरवीर गोगाजी गौशाला समिति मीतासर की ओर से चल रही 9 दिवसीय श्रीराम कथा के अंतिम दिन कथा वाचक शंकर दास महाराज ने रविवार को लंका दहन और रावण वध की कथा का वर्णन किया। उन्होंने प्रसंग सुनाते हुए बताया कि पंचवटी में भगवान श्री राम, लक्ष्मण और जानकी कुटिया में रहने लगते हैं। राम, सीता को नर लीला करने के लिए कहते हैं। सीता को अग्नि देव शिक्षा प्रदान करते हैं। इसी दौरान पंचवटी में शूर्पणखा आती है। वह सुंदर बनकर भगवान राम के आगे शादी का प्रस्ताव रखती है। राम उनको कहते हैं कि वह विवाहित हैं और उनका भाई लक्ष्मण अभी तक अविवाहित है। इसके बाद शूर्पणखा उससे विवाह का निवेदन करती है। शूर्पणखा के बार-बार जिद करने पर वह नहीं मानते। इसी दौरान शूर्पणखा अपने कुरुप रूप में आकर सीता को मारने की धमकी देती है। इस पर क्रोधित होकर लक्ष्मण उसकी नाक काट देते हैं। इसके बाद शूर्पणखा खरदूषण, त्रिसरा के पास जाती है। वह राम से युद्ध करते हैं। भगवान सभी निशाचरों का अंत कर देते हैं। इसके बाद शूर्पणखा रावण को इस युद्ध के बारे में बताती है। तब रावण क्रोध में आकर कहता है कि प्रभु का अवतार हो गया। अब मैं उनसे बैर पैदा कर सीता का हरण करूंगा। रावण मारीच की सहायता से सीता का हरण कर लेता है। उधर जटायु से रावण युद्ध करता है। जटायु को घायल कर रावण, सीता को अशोक वाटिका ले जाता है। भगवान राम और लक्ष्मण सीता को खोजते हुए जटायु के पास पहुंच जाते हैं। राम को जटायु बताते हैं कि रावण माता सीता का हरण करके ले गया है। इसके बाद वह हनुमान को मिलते हैं। हनुमान उनको अपने कंधों पर सुग्रीव के पास ले जाते हैं। सुग्रीव राम की सहायता से बाली का वध करवा देते हैं। इसके बाद सीता की खोज के लिए अंगद, जामवंत, हनुमान निकल पड़ते हैं। शंकर दास जी महाराज ने बताया कि हनुमान की तरह अगर हमारी राम नाम में श्रद्धा मजबूत होगी तो अंहकार, ईर्ष्या, लोभ और मोह अपने आप छूट जाएंगे। इसके बाद कथा में लंका दहन, अंगद संवाद और रावण वध की कथा का वर्णन किया। शंकर दास महाराज ने कहा कि आखिर में भगवानराम वापस अयोध्या पहुंचे और वहां पर भगवान राम का राज्याभिषेक किया गया।

संत निरंकारी मण्डल के स्वयं सेवकों ने किया श्रमदान

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। संत निरंकारी मिशन ने बाबा हरदेव सिंह महाराज की प्रेरणादायक शिक्षाओं को आत्मसात करते हुए वर्ष 2023 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 'प्रोजेक्ट अमृत' का शुभारंभ किया था। इस दिव्य पहल का उद्देश्य केवल जल स्त्रोतों की स्वच्छता सुनिश्चित करना ही नहीं, बल्कि जल संरक्षण को मानव जीवन का अभिन्न अंग बनाने की सोच को विकसित करना है। राजगढ़ रोड़ स्थित एनएच 52 पर निरंकारी सतसंघ भवन में रविवार को इस अभियान को पूर्व की भांति स्वच्छ जल स्वच्छ मन संदेश के साथ आयोजित किया गया। इस दौरान मिशन के लगभग 150 स्वयंसेवकों ने समर्पित भाव से परिसर में श्रमदान कर वहां की सफाई व्यवस्था को सुचारू किया और स्वच्छता का संदेश दिया। इसी क्रम में चूरू जॉन 19 में 16 स्थानों पर इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास किया जा रहा है। निरंकारी मिशन चूरू के जोनल इंचार्ज शिव भगवान बजाज ने बताया कि यह अभियान देशभर में 27 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के 900 से अधिक शहरों में 1600 से भी अधिक स्थानों पर एक साथ आयोजित किया गया। उसी तर्ज पर चूरू में इस अभियान को सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। उन्होंने कहा कि सतगुरु माता सुदीक्षा महाराज भी हमेशा यहीं प्रेरणा देते हैं कि हम इस धरती को और भी अधिक सुंदर बनायें। यह अभियान उसी संकल्प का एक साकार स्वरूप है, जो समाज को जागरूकता, सेवाभावी और समर्पण की दिशा में आगे बढ़ाने का कार्य करेगा। इस अवसर पर बड़ी संख्या में निरंकारी मण्डल के स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

80 साल से अधिक उम्र के 50 वरिष्ठ पेंशनरो का सम्मान

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। राजस्थान पेंशनर्स समाज शाखा सुजानगढ़ में तहसील स्तरीय स्नेह मिलन कार्यक्रम पंचायत समिति सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें 80 वर्ष से अधिक उम्र वाले पेंशनर्स अभिनंदन किया गया। इसी प्रकार फरवरी में जन्मदिन वाले पेंशनर्स को मिठाई भी प्रदान की गई। पूर्व मंत्री खेमाराम मेघवाल के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में जिला सचिव पूर्णमल सोनी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष ओमप्रकाश तंवर, शेरसिंह, अनवर कुरेशी, अध्यक्ष रेखा राम मेहरड़ा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विद्याधर पारीक, बैंक मैनेजर सुनिल कुमार, लक्ष्मण चौधरी अतिथि के रूप में मौजूद रहे, जिन्होंने पेंशनर्स का सम्मान किया। मन्नालाल भींचर ने आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। सचिव सुरजाराम डाबरिया ने वार्षिक प्रगति रिपोर्ट व सदस्य को जोड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ पेंशनर 50 से ज्यादा का सम्मान किया गया। लगभग 150 से ज्यादा पेंशनर्स ने कार्यक्रम में भाग लिया। वरिष्ठतम पेंशनर नोरगंलाल शर्मा, नरसाराम फलवाडिया, मूलचंद स्वामी, हरिराम जानू, रामेश्वरलाल सारण, चिरंजीलाल स्वामी, भैरूदान नाई, सरदारमल तंवर, पीरदान नाई, शांति नाई, उर्मिला देवी, श्याम लाल भार्गव, रामकुमार यादव आदि का स्वागत सम्मान हुआ। कार्यक्रम में पीराराम गुलेरिया, चैनरुप दायमा, आदूराम मेघवाल, लक्ष्मन डुकिया, रामकुमार मेघवाल, हाकिम अली, बजरंग नाई, किसनलाल कटारिया, दीपाराम मेंघवाल, मीरा गुप्ता, पुष्पलता मित्र, नरेंद्र भाटी, ताराचंद सारण, ओंकार मल मेघवाल, रामाकिशन फुलवारियां, लक्ष्मण तेजस्वी, कन्हैयालाल मारोठिया, कानाराम जाखड़, परमेश्वर लाल शर्मा, भंवरलाल बुगालिया, शंकरलाल गोयनका, रामचंद्र जाट आदि मौजूद रहे। अध्यक्ष रेखाराम मेहरडा ने आभार व्यक्त किया। संचालन सुरजाराम डाबरिया किया।

पूर्णाराम की स्मृति में दो गट्टों का निर्माण

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। शहर के निकटवर्ती ग्राम जेगणिया बीदावतान में पूर्णाराम हिंदू की स्मृति में दो गट्टे का निर्माण गांव के गुवाड़ में बनाए गए। पूर्णाराम सिलु की स्मृति में उनके पुत्र जगदीश सिलु और पौत्र मोहित सिलु की ओर निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि ने किया?। समारोह में सरपंच देवीलाल मेघवाल, पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि, वशिष्ठ अतिथि अर्जुनसिंह फ्रासा, हिम्मत सिंह मालासी, गिरधारी सिंह पूर्व सरपंच प्रतिनिधि, जिला परिषद सदस्य नोरगसिलु मंचासिन रहे। दानदाता परिवार ने पधारे अतिथियों का साफा शाल ओढ़ाकर स्वागत किया। जिसके बाद गट्टे का उद्घाटन पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि ने किया। विधायक अभिनेष महर्षि से ग्रामीणों ने विकास के लिए जन समस्या से अवगत करवाया। जिसपर पुर्व विधायक ने कहा कि मैं विधानसभा का प्रतिनिधी नहीं होने के कारण घोषणा नहीं कर सकता फिर भी आपकी बात सरकार तक पहुंचाने का पुरा प्रयास करूंगा। कार्यक्रम में अमीत प्रजापत, रामप्रकाश, खेमाराम सिलु, रामचन्द्र सिलु, न्योलाराम, तेजाराम सिलु, किसनाराम, पुरखाराम, तिलोकाराम गोदारा, सोहनराम सहित कई ग्रामीण मौजूद रहे।

चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर एएनएम सुलेखा का किया अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला मुख्यालय स्थित पेंशनर भवन में रविवार को एचएलवी एएनएम संघ व चिकित्सा व स्वास्थ्य विभाग चूरू की ओर से चिकित्सा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खांसोली की एएनएम सुलेखा अम्माल एके का भव्य अभिनंदन किया गया। एएनएम संघ की जिलाध्यक्ष बाला राठौड़ व शारदा चौधरी के नेतृत्व में सुलेखा का माल्यार्पण कर, साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर व प्रतीक चिन्ह् प्रदान कर सम्मान किया गया। जिलाध्यक्ष बाला राठौड़ ने बताया कि सुलेखा ने न केवल राजकीय सेवा में बल्कि सामाजिक सरोकारों में भी अपने दायित्व को निष्ठा पूर्वक निर्वहन किया है। इस अवसर पर बीसीएमओ डॉ. जगदीश सिंह भाटी, बीपीएम ओमप्रकाश प्रजापत, वरिष्ठ सहायक सुरेंद्र कुमार शर्मा, नौरंग लाल गुसाई, चिकित्सा अधिकारी डॉ. अनुशंसा सहारण, ब्लॉक अध्यक्ष इन्द्रा सैनी, सरोज, कमला, सुजाता, भगवती, सत्यवती, सरोज लुगरिया, कविता सिहाग, मधुबाला, कलावती, सुभिता, सुमित्रा बुड़ानिया, राजबाला, इन्दूबाला, संतबाला, मनोहरी सहित बड़ी संख्या में महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ता उपस्थित रही।

विधानसभा घेराव में जाएंगे चूरू के कांग्रेस कार्यकर्ता

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। राजस्थान विधानसभा घेराव में सोमवार को चूरू जिले भर से कांग्रेस जन जाएंगे। चूरू जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष जमील चौहान ने कहा कि भाजपा सरकार के मंत्री की ओर से पूर्व प्रधानमंत्री "भारत रत्न" इन्दिरा गांधी पर अमर्यादित टिप्पणी व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा समेत वरिष्ठ 6 कांग्रेस विधायकों को सदन से निलंबित करने, भाजपा के मंत्रियों की ओर से विवादित बोल व भाजपा सरकार की हठधर्मिता के विरोध में सोमवार को विधानसभा घेराव कर विरोध- प्रदर्शन किया जाएगा। राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आहवान पर होने वाले विधानसभा घेराव के लिए अधिक से अधिक संख्या में जयपुर पहुंचकर तानाशाही के खिलाफ आवाज़ बुलंद करने के लिए जनप्रतिनिधियों, कांग्रेस अग्रिम संगठन के कार्यकर्त्ता जाएंगे।

पूर्व विधायक ने किया मरूधरा नामक फेसबुक पेज पर लिखी पोस्ट का खण्डन

जयपुर टाइम्स

राजलदेसर(निस)। कस्बे में रिक्त पदों को लेकर धरने के बाद सोशल मीडिया पर कई तरह के बयान सामने आ रहे हैं। जिसमें मरूधरा नाम के एक फेसबुक पेज पर एक पोस्ट , सरकार के जनप्रतिनिधि चिकित्सालय में डाक्टर नहीं लगने दे रहे है। जिस पर पूर्व विधायक अभिनेष महर्षी ने इसका खण्डन करते हुए कहा कि इस तरह की झूठी अफवाहें फैलाई जा रहे हैं। यदि इसके पुख्ता सबूत दो। यह जो धरना दे रहे हैं उनके मन में कुछ और है कभी वो भाजपा के सदस्य, पदाधिकारी बन जाते हैं कभी कांग्रेस के साथ खड़े हो जाते हैं। उनके खुद का दवाईयों का कारोबार है, अपने कारोबार से जोड़कर डाक्टरों को देखते हुए उनको परेशान कर शिकायत करते रहते हैं। उनके व्यक्तिगत स्वार्थ की जब टकराहट होती है तब सारा स्टाफ चाहे डाक्टर हो, नर्सिंग स्टाफ हो, सभी को परेशान किया जाता है। अब बजट राजस्थान के मुख्यमंत्री इतना अच्छा दिया कि कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं बचा। कुछ तथाकथित पत्रकारो ने धरना शुरू किया जिसमें बैनर पत्रकारों का लगाया। पत्रकारों का काम लिखने का है धरना देने का नहीं, ये काम संगठनो का है।

चूरू महोत्सव में शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियों पर झूमे उठे लोग

गुलाबो सपेरा, पार्श्व गायक रविंद्र उपाध्याय ने बांधा समां

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला मुख्यालय पर पुलिस लाइन में चल रहे चूरू महोत्सव - 2025 के पहले दिन शनिवार शाम को सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत, जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा, जिला उप प्रमुख महेंद्र न्यौल सहित जनप्रतिनिधि, अधिकारियों व चूरूवासियों ने शिरकत की। पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़ ने कहा कि चूरू की संस्कृति संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। यहां के पंडित भरत व्यास ने सिनेमा जगत में बहुत बड़ा नाम कमाया है। यहां की संस्कृति की बदौलत चूरू को छोटी काशी कहा जाता है। सभी लोग मिलकर लोकरंग का आनंद लें और अपनी विरासत का संरक्षण करें। उन्होंने कहा कि यहां के वीरों ने देश प्रेम की उत्कट ज्वाला से 1930 में आजादी से 17 साल पहले ही तिरंगा फहराया गया था। यह भामाशाहों, संस्कारों और संस्कृति की धरती है। इसलिए हम इसको आत्मसात करें और भावी पीढ़ी को भी विरासत में दें। विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि चूरू महोत्सव 2025 का आयोजन एक विशेष और सराहनीय पहल है।आज से 18 साल पहले आयोजित चूरू महोत्सव की यादें ताजा हो गई हैं। हम इसी तरीके से अपनी सक्रिय भूमिका के साथ यहां की संस्कृति, संस्कार व परंपराओं को जिएं और उन्हें आगे बढ़ाएं। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजेंद्र राठौड़, विधायक हरलाल सहारण, जिला प्रमुख वंदना आर्य, प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत, जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा आदि अतिथियों ने प्रवासी सम्मान गौरवश्री अवार्ड से प्रवासी चूरूवासियों का सम्मान किया।

पद्मश्री गुलाबो ने तीसरी पीढ़ी के साथ दी प्रस्तुति

सांस्कृतिक संध्या के दौरान पदमश्री गुलाबो ने अपनी तीसरी पीढ़ी के साथ लोकगीतों पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसी के साथ कोक स्टूडियो फेम भंवरी देवी, प्रसिद्ध कोरियोग्राफर संतोष नायर की ओर से निर्देशित वाइब्रेंट इंडिया समूह नृत्य प्रस्तुति और बॉलीवुड पार्श्व गायक रविंद्र उपाध्याय ने हिंदी गीतों की प्रस्तुति दी। इस दौरान एडीएम अर्पिता सोनी, सीईओ श्वेता कोचर, एएसपी लोकेंद्र दादरवाल, एएसपी कृष्णा, पूर्व सभापति विजय शर्मा, विक्रम कोटवाद, सुशील लाटा, अभिषेक चोटिया, दीनदयाल सैनी, सुरेश सारस्वत, चूरू एसडीएम बिजेंद्र सिंह, तारानगर एसडीएम राजेंद्र कुमार, रतनगढ़ एसडीएम रामकुमार वर्मा, तहसीलदार अशोक गोरा, राजगढ़ तहसीलदार धीरज झाझड़िया सहित अधिकारी, जनप्रतिनिधि व बड़ी संख्या में नागरिक मौजूद रहे।

प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत ने सांगासर में किया जेजेएम कार्यों का निरीक्षण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ(निस)। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी व भूजल विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव जिला प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत ने रविवार को जिले के रतनगढ़ के सांगासर में जेजेएम अंतर्गत किए गए कार्यों का निरीक्षण किया तथा ग्रामीणों से फीडबैक लिया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सभी ग्रामवासी मिशन अंतर्गत पेयजल की समयबद्ध व समुचित आपूर्ति के लिए संसाधनों का समुचित रख-रखव करें। इसी के साथ विभागीय अधिकारी संसाधनों के विकास के साथ रख रखाव पर विशेष ध्यान दें। प्रदेश सरकार अंतिम छोर के व्यक्ति तक अपनी योजनाओं के माध्यम से समुचित सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए संकल्पित है। उन्होंने सांगासर में जल जीवन मिशन अन्तर्गत करवाए गए कार्य का निरीक्षण किया और ग्रामवासियों से फीडबैक व जल जीवन मिशन के कार्यो के संबंध में विस्तृत रूप से चर्चा की। सरपंच हरिप्रसाद दायमा व ग्रामीणों ने सुचारू सप्लाई व्यवस्था की जानकारी दी। एडीएम मंगलाराम पूनिया ने योजना के संचालन व संधारण के बारे में चर्चा की। इस दौरान एसडीएम रामकुमार वर्मा, अतिरिक्त मुख्य अभियंता राममूर्ति चौधरी, अधीक्षण अभियंता चुन्नीलाल, अधिशाषी अभियंता महेन्द्र कांटीवाल, सहायक अभियंता पूजा शर्मा व कनिष्ठ अभियंता रामनिवास उपस्थित रहे।

भाजपा शहर मण्डल ने मोदी के मन की बात का 119वां संस्करण सुना

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। भारतीय जनता पार्टी रतनगढ़ शहर मण्डल के पदाधिकारी व कार्यकर्ताओं ने देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात के 119 वें संस्करण का लाइव प्रसारण सुना। ओबीसी मोर्चा के अध्यक्ष किशनलाल घोड़ेला ने बताया कि पीएम मोदी ने अपने संबोधन की शुरूआत करते हुए इसरो की सफलता का जिक्र किया।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के एपिसोड में "उत्तराखंड में आयोजित राष्ट्रीय खेलों में देशभर के एथलीटों के शानदार प्रदर्शन व इस बार महिला दिवस पर एक पहल जो हमारी नारी-शक्ति को समर्पित होगी। एक फिट और हेल्दी नेशन पर भी चर्चा की। इस अवसर पर मन की बात कार्यक्रम में महेश सैनी, पूर्णमल दादरवाल, निरंजन रूंथला, विष्णु लुहानिवाल, बूथ अध्यक्ष हिरालाल प्रजापत, पुरषोत्तम प्रजापत, भंवर लाल टेलर, बजरंग लाल प्रजापत, भीमराज प्रजापत, ओम महर्षि, साबिर गौरी, प्रदीप सैनी सहित दर्जनों कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे ।

तेरापंथ भवन में एक दिवसीय संगोष्ठी आयोजित

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। अखिल भारतीय साहित्य परिषद स्थानीय इकाई व जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय प्रादेशिक संगोष्ठी तेरापंथ भवन में रविवार को हुई। पूर्व विधायक अभिनेष महर्षि के मुख्य आतिथ्य में हुए कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो कमलसिंह कोठारी रहे। समारोह में समणी जयंतप्रज्ञा व संमति प्रज्ञा, प्रो अन्नाराम शर्मा मंचस्थ अतिथि रहे। वक्ताओं ने भगवान महावीर के विचारों को प्रकट करते हुए कहा कि महावीर एक प्रकाश पुंज थे। केवल भारतीय ही नहीं, विदेशी भी महावीर स्वामी को पूजते हैं। उन्होंने कहा कि महावीर ने दुनियां को जीता, हम अपने आप को जीतने का प्रयास करें। संगोष्ठी में कोटपूतली के डॉ ओमप्रकाश भार्गव, बारां के प्रद्युम्न वर्मा व पूजा सोनी, निम्बाहेड़ा के डॉ रविंद्र उपाध्याय, जयपुर के इंद्रकुमार भंसाली, चूरू की स्नेहलता शर्मा, रतनगढ़ के अरविंद रत्नधरा ने शोधपत्र प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में स्वागत उदघाटन परिषद के जयपुर प्रांत महामंत्री राजेंद्र मुसाफिर ने किया। विभिन्न सत्रों में मोतीलाल तातेड़, बाबूलाल गोलछा, विनोद डागा, महेंद्र तातेड़, कमलसिंह बैद, नरेंद्र बैद, राजकुमार बैद, शिक्षाविद अंबिकाप्रसाद हारित, वासुदेव चाकलान, तेजपालसिंह गुर्जर, प्रताप बोथरा, कमलसिंह बैद, अजय गार्गी, प्रो कल्याणसिंह चारण, साहित्य परिषद के क्षेत्रीय संगठन मंत्री विपिनचंद्र पाठक मंचस्थ अतिथि रहे। मनोज चारण, सत्यनारायण टेलर, भानुप्रिया, रमेश सोनी ने सत्रों का संचालन किया। कार्यक्रम में कैलाश आत्रेय, ओमप्रकाश पुजारी, अनिरूद्ध दायमा, राजेंद्रप्रसाद चांदगोठिया, ओमप्रकाश सांखोलिया, कन्हैयालाल चौमाल, राजेंद्रसिंह बीदावत, ओमप्रकाश महर्षि, महेंद्र शर्मा, लीलाधर सारस्वत, दिलीप स्वामी, परमेश्वर आत्रेय ने आयोजकीय भूमिका निभाई।

बजट घोषणाओं के त्वरित क्रियान्वयन के लिए अधिकारी समग्र प्रयास करेंः सावंत

बजट घोषणाओं की क्रियान्विति को लेकर समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी व भूजल विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव तथा जिला प्रभारी सचिव भास्कर ए सावंत ने शनिवार को जिला परिषद सभागार में बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन को लेकर बैठक में अधिकारियों को समुचित दिशा-निर्देश दिए। इस अवसर पर प्रभारी सचिव सावंत ने कहा कि बजट घोषणाओं की क्रियान्विति के लिए अधिकारी समग्र प्रयास करें। सभी अधिकारी त्वरित क्रियान्विति के लिए सभी गतिविधियां समयबद्ध ढंग से सुनिश्चित करें। प्रदेश सरकार की बजट घोषणाओं की समयबद्ध ढंग से शत प्रतिशत क्रियान्विति सुनिश्चित हो, इसके लिए प्रतिबद्धता रखें। उन्होंने कहा कि घोषणाओं के संबंध में राज्य स्तर से किए जाने वाले आवश्यक पत्राचार आदि किए जाएं तथा जिला स्तर पर घोषणाओं की क्रियान्विति की समस्त मॉनीटरिंग की जाए। उन्होंने जिले के लिए बजट 2024- 25 और बजट 2025 -26 में हुई घोषणाओं को लेकर चर्चा की तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा- निर्देश दिए। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने जिले में घोषणाओं के बारे में विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बजट घोषणाओं की क्रियान्विति के लिए किए जाने वाले प्रयास व तैयारियों की जानकारी दी। इस दौरान सीईओ श्वेता कोचर, डीएफओ वीरेंद्र कृष्णिया, सीडीईओ गोविंद सिंह राठौड़, कॉपरेटिव एमडी मदनलाल, डॉ रविन्द्र बुडानिया, सानिवि एसई पंकज यादव, पीएचईडी प्रोजेक्ट एसई राममूर्ति, पीएचईडी एक्सईएन प्रेम कुमार, उद्योग महाप्रबंधक उजाला सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

प्रतिभा सम्मान समारोह की तैयारियों को लेकर बैठक

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। डॉ अम्बेडकर अनुसूचित जाति अधिकारी कर्मचारी संगठन (अजाक) की बैठक रविवार को मेघवाल गेस्ट हाउस, भीम नगर में हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता अजाक जिलाध्यक्ष अशोक आलड़िया ने की। बैठक में प्रतिभा सम्मान समारोह की तैयारियों को लेकर चर्चा की गई। कार्यक्रम की जिम्मेदारी संगठन के साथियो को अलग अलग दी गई। जिले की एससी एसटी माइनॉरिटी समाज के नवनियुक्त व सेवानिवृत अधिकारी कर्मचारी और प्रतिभाओं का सम्मान समारोह को लेकर जिम्मेदारी तय की गई। समारोह में कक्षा 10, 12 में व कॉलेज स्तर पर 90: से अधिक अंक अर्जित करने वाले, खेल कूद में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता व अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों, सेवानिवृत कर्मचारियों, नव नियुक्त अधिकारी-कर्मचारी व नीट आईआईटी में चयनित होने वालों का सम्मान किया जाएगा। इस अवसर पर काफी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

लोढ़सर में क्रेशर में लगी आग, 5 मजदूर घायल

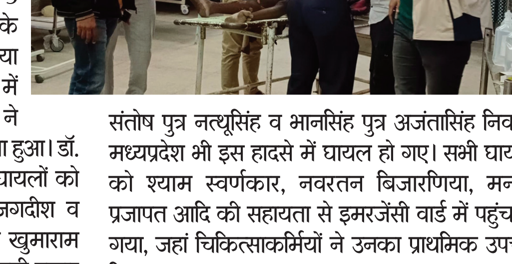

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती गांव लोढ़सर में स्थित एक क्रेशर पर उस वक्त हादसा हो गया, जब लोहे की कटिंग करते वक्त हुई मामूली सी लापरवाही से आग लग गई और 5 मजदूर इसकी चपेट में आ गए। जानकारी के अनुसार रविवार की शाम को राजकीय बगड़िया अस्पताल पांचों घायलों को एक निजी गाड़ी में लाया गया। घायलों को लाने वाले व्यक्ति ने बताया कि लोहे की कटिंग करते वक्त ये हादसा हुआ। डॉ. अनुराग गोयल ने बताया कि गंभीर रूप से घायलों को हायर सेंटर रैफर किया गया। घायलों में जगदीश व बीरबल पुत्र हीरालाल मेघवाल, बाबूलाल पुत्र खुमाराम निवासी ढ़िगारिया पालास के नाम शामिल हैं। इसी प्रकार संतोष पुत्र नत्थूसिंह व भानसिंह पुत्र अजंतासिंह निवासी मध्यप्रदेश भी इस हादसे में घायल हो गए। सभी घायलों को श्याम स्वर्णकार, नवरतन बिजारणिया, मनोज प्रजापत आदि की सहायता से इमरजेंसी वार्ड में पहुंचाया गया, जहां चिकित्साकर्मियों ने उनका प्राथमिक उपचार किया।

दादी कोई अपमानजक शब्द नहीं : मंत्री अविनाश गहलोत

जयपुर टाइम्स

झुंझुनूं(निस)। झुंझुनूं प्रभारी मंत्री अविनाश गहलोत ने कहा कि उन्होंने इन्दिरा गांधी को लेकर कोई अपमानजनक शब्द नहीं कहे है। हमारे परिवार में जो बुजुर्ग है क्या उन्हें हम दादा दादी, माता पिता ताऊ ताई नहीं बोलते। यह सम्मानजनक शब्द है। हमारी हिन्दी डिक्शनरी में भी हमारे परिवार के बोलचाल के अंदर भी। वे रविवार को झुंझुनूं में बजट की समीक्षा और क्रियान्वयन के लिए अधिकारियों के साथ बैठक लेने आए थे। इस दौरान मीडिया से बातचीत के दौरान उन्होंने ये बात कही है। मंत्री ने कहा कि इंदिरा गांधी कांगेस की बड़ी नेता रही है। कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद, राहुल गांधी और प्रियंका खुद मंच से लगातार कहती है कि हमारी दादी ने देश के लिए बलिदान दिया है। हमने भी वह शब्द इस्तेमाल किया है। बेवजह बातों को हाइलाइट करने के लिए इस तरह के आरोप लगाए जा रहे है। मैंने कोई भी असम्मानजनक शब्द नहीं कहे है। गहलोत ने यह भी स्पष्ट किया कि पूर्ववर्ती सरकार की ओर से इंदिरा गांधी के नाम पर की गई घोषणा के बावजूद फंड जारी नहीं किया गया था। उन्होंने कहा कि यदि कांग्रेस को मेरी ओर से प्रयोग किए गए शब्द से आपत्ति है और यदि वह असंसदीय माना जाता है, तो उसे विधानसभा की कार्रवाई से हटा दिया जाए। फिर भी, मेरी पार्टी और विधायक दल के नेता जो भी निर्णय लेंगे, मैं उसे मानने को तैयार हूं। हमारा प्रयास विपक्ष को साथ लेकर चलने का है, ताकि आमजन से जुड़े मुद्दों पर सार्थक चर्चा हो सके। रही बात विधायकां को निलंबित करने की तो वह विधानसभा की कार्यवाही बाधित कर रहे थे। इसलिए उन्हें विधानसभा से निलंबित किया है।

समावेश बजट

मंत्री अविनाश ने कहा कि मुख्यमंत्री के निर्देश पर बजट की समीक्षा और क्रियान्वयन के लिए सभी मंत्री जिला मुख्यालय पर उपस्थित है। जिलाधिकारियों के साथ बजट को लेकर रिव्यू मीटिंग हुई है, गत बजट की समीक्षा भी हुई है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में बजट में जो घोषणाए हुई है। उसका सही समय पर क्रियान्वयन हो इसके लिए चर्चा की गई है। समावेश बजट है, हर वर्गो को लाभान्वित किया गया है। यह बजट पूरे राजस्थान के लिए ऐतिहासिक है। भजनलाल शर्मा राजस्थान को ऊंचाई पर ले जाने का प्रयास कर रहे है। इकोनॉमी को डबल करने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि विकास के मामले में राजस्थान पूरे देश में दूसरे नंबर पर है। आने वाले समय में राजस्थान को एक नंबर पर लाए यह मुख्यमंत्री का वीजन है। प्रयास कर रहे है कि राजस्थान एक नंबर पर रहे। उन्हांने कहा कि यमुना जल समझौते को लेकर हाल ही में हमारे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की हरियाणा के सीएम से मुलाकात हुई है। बहुत ही जल्द यमुना जल समझौते की टास्क फोर्स का गठन कर इसमे तेज गति से काम करेंगे। जिले में लगातार बढ़ रहे अपराध बोलते हुए कहा कि निश्चित ही अपराध में कमी लाने की सरकार की जिम्मेदारी होती है। एक साल में राजस्थान में अपराध का ग्राफ 10 प्रतिशत कम हुआ है। झुंझुनूं में कुछ घटनाएं हुई है। पुलिस के उच्च अधिकारियों से लगातार हमारी बात हुई है। उदयपुरवाटी में होटल में हुई मारपीट के मामले में 3 लोगों को अरेस्ट कर लिया गया है। बाकी जो आरोपी है उसकी धरपकड़ जारी है। कोशिश कर रहे है राजस्थान अपराध मुक्त बने। मुख्यमंत्री लगातार प्रयास कर रहे है कि राजस्थान में कानून व्यवस्था मजबूती के साथ बनाए रखे। ताकि आमजन का विश्वास सरकार बना रहे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।